।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MBD-64/2013-16
दयानन्दाब्द १९१,
सृष्टि सं.-१९६०८५३११५

वर्ष-14 / संयुक्तांक- 6-7 / आषाढ़ कृ० १५ से आषाढ़ पूर्णिमा सं. २०७२ वि. 01-15 / 16-31 जुलाई 2015 / अमरोहा (उ.प्र.) / पृ.- 16 / मूल्य- 5/-

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

२७-२८ नवम्बर को होगा ऑस्ट्रेलिया में

विनय आर्य
सिडनी (आस्ट्रेलिया)।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्वावधान में ऑस्ट्रेलिया आर्य महासभा के सानिध्य में अगला अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 27, 28 नवम्बर 2015 को ऑस्ट्रेलिया के सिडनी महानगर में सम्पन्न होगा। यह जानकारी देते हुए मंत्री श्री प्रकाश आर्य और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने बताया कि इस सम्बन्ध में सिडनी में महासम्मेलन की रूप रेखा तैयार करने के सन्दर्भ में 3 मई को एक व्यापक बैठक हो चुकी है, जिसमें सार्वदेशिक सभा के पदाधिकारियों के साथ ऑस्ट्रेलिया के आर्य नेताओं ने भाग लिया।

बैठक में इस अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन को सफल बनाने, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार और अधिक तीव्रता देने के विषय में विस्तार से चर्चा हुई। बैठक का शुभारम्भ यज्ञोपरान्त किया गया।

ज्ञातव्य है कि सार्वदेशिक सभा के नेतृत्व में इससे पूर्व 2 नवम्बर को सिंगापुर तथा 8 व 9 नवम्बर को थाईलैण्ड में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन हुए हैं।

आर्यसमाज गुधनी, बदायूं के वार्षिकोत्सव में देवेन्द्रपाल वर्मा व आचार्य संजीव रूप के साथ अतिथिगण -केसरी।

आर्यसमाज गुधनी (बदायूँ) में यज्ञ महोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

वृक्षारोपण, पर्यावरण जागरूकता, भव्य शोभायात्रा, बेटियाँ बचाओ, २१ कुण्डीय यज्ञ व आगामी वर्ष के यजुर्वेद पारायण यज्ञ का शुभारम्भ आदि कार्यक्रमों से अद्भुत यादें छोड़ गया गुधनी का यज्ञ महोत्सव

चित्रों सहित विस्तृत रिपोर्ट
पृष्ठ- ८ पर

हरिद्वार में अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षक महाकुम्भ का भव्य आयोजन

डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार
हरिद्वार।

कुम्भ नगरी की प्रसिद्ध संस्था सेवाकुंज के गंगातट पर भव्य एवं मनोरम प्रांगण में विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में भारतीय संस्कृति रक्षार्थ एवं सेवाकुंज के तत्वावधान में समारोहपूर्वक अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षक महाकुम्भ का शुभारम्भ हुआ।

तीन दिन तक चले इस भव्य समारोह का शुभारम्भ प्रोफेसर महावीर अग्रवाल (कुलपति- उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय) व पूर्व मंत्री मदन कौशिक तथा फिजी से पधारे हिन्दी विद्वानों द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस अवसर पर डॉ0 प्रेमचन्द शास्त्री, सतीश शास्त्री, करणसिंह, डॉ0 आर0ए0 सिंह आदि ने विभिन्न सभाओं को सम्बोधित किया। समापन भव्य कवि सम्मेलन के साथ हुआ। कार्यक्रम का संचालन डॉ. यतीन्द्र कटारिया ने किया।

आर्यावर्त केसरी के आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि 'आर्यावर्त केसरी' के नाम से भारतीय स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 30404724002 अथवा सिंडीकेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 88222200014649 में सीधे जमा करा सकते हैं, जिसकी सूचना अपने पासपोर्ट साइज़ फोटो, नाम, पते व चलभाष सहित अविलम्ब हमें भेज दें। सहयोग राशि एकाउन्टपेयी चैक या धनादेश द्वारा भी भेजी जा सकती है। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.), दूर. -05922-262033, चल.- 09758833783 / 08273236003

आइये! आज ही आर्यावर्त केसरी के मिशन से जुड़िए...

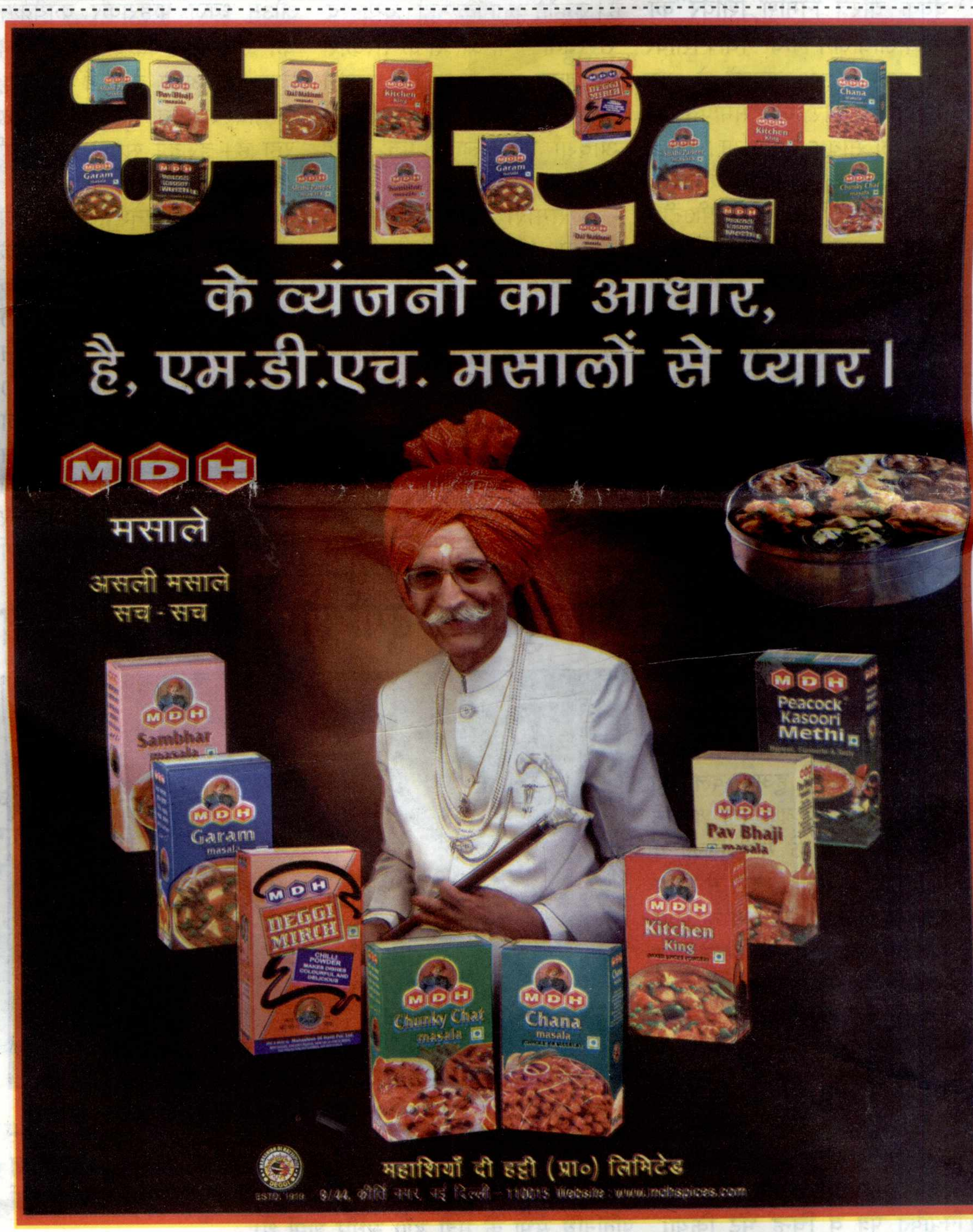

ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल परिसर में आयोजित शिविर में केआयुप के पदाधिकारी व पुरस्कृत शिविरार्थी- केसरी।

आठ दिवसीय आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर का भव्य आयोजन

चरित्रवान युवा ही राष्ट्रीय कर्तव्य का पालन कर सकते हैं –केन्द्रीय मन्त्री डॉ. महेश शर्मा

चरित्रवान युवक राष्ट्र की सबसे बड़ी आवश्यकता : डॉ योगानन्द शास्त्री

डॉ. अनिल आर्य/प्रवीण आर्य/हर्ष बवेजा
नोएडा (उ.प्र.)

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल सैक्टर 44 नोएडा में 6 जून से 8 दिवसीय विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर का भव्य आयोजन किया गया। शिविर में लगभग 300 युवकों ने भाग लिया। शिविर का समापन 14 जून को सायं 5 बजे हुआ। शिविर में 8 दिन तक युवकों को योगासन, प्राणायाम, नैतिक शिक्षा, पी0टी0, जूडो–कराटे, दण्ड–बैठक, आत्म–रक्षा प्रशिक्षण, नेतृत्वकला, भाषण कला, भारतीय संस्कृति, संध्या–यज्ञ, देश भक्ति की भावना आदि का प्रशिक्षण दिया गया।

शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे केन्द्रीय मन्त्री डॉ. महेश शर्मा ने कहा कि चरित्रवान युवा पीढ़ी में ही राष्ट्र का भविष्य सुरक्षित है, यह युवा ही देश की दिशा व दशा को बदलेंगे। महर्षि दयानन्द ने जो समाज निर्माण का स्वपन देखा था, वह इन प्रशिक्षित युवाओं को ही पूरा करना है।

इस अवसर पर डॉ0 योगानन्द शास्त्री, पूर्व अध्यक्ष दिल्ली विधान सभा ने दीप प्रज्वलन कर शिविर का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि चरित्रवान युवक राष्ट्र की सबसे बड़ी आवश्यक्ता है बिना चरित्र व संस्कारों के युवक पशु के समान है। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी व्यक्ति के संस्कारों पर बहुत बल दिया है। उन्होंने कहा कि आज राष्ट्र महर्षि के आदर्शों पर चलकर पुनः विश्व गुरू बन सकता है।

समारोह अध्यक्ष आनन्द चौहान, निदेशक ऐमेटी शिक्षण संस्थान ने कहा कि आर्य समाज द्वारा शिविर में जो संस्कार दिये जाते हैं उन्हीं में देश का भविष्य निहित है। महर्षि दयानन्द के हमारे समाज पर बहुत उपकार हैं। अनेक विद्वानों द्वारा समाज को सही शिक्षा दी जा रही है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 अनिल आर्य ने कहा कि परिषद देश भर में युवा पीढ़ी को संस्कारित करने का व्यापक अभियान चला रही है। उन्होंने बताया कि इस वर्ष देश भर में विभिन्न प्रान्तों में 16 युवक व युवतियों के शिविर चल रहे हैं। डॉ0 आर्य ने कहा कि यह चरित्रवान युवा देश की दशा व दिशा को बदलेंगे।

आर्य नेता मायाप्रकाश त्यागी, कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य उपप्रतिनिधि सभा नई दिल्ली ने ओ3म् ध्वज फहराकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। त्यागी ने कहा कि आज देश में पाखण्ड, अन्धविश्वास व गुरूडमवाद बढ़ रहा है। इसका सुधार यह आर्य युवा ही करेंगे।

ऐमेटी इन्टरनेशनल स्कूल की चेयरपर्सन डॉ0 अमिता चौहान के सानिध्य व केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 अनिल आर्य के नेतृत्व में सम्पन्न इस शिविर में वैदिक विद्वान डॉ0 ब्रह्मदेव वेदालंकार ने युवकों को आवाहन करते हुये कहा कि जिन माता–पिता और गुरूओं ने अपनी सभी सुख सुविधाओं को छोड़कर तुम्हारी आवश्यकताओं को पूर्ण किया, ऐसे माता–पिता हमेशा पूजनीय हैं।

समारोह अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार चौहान (संस्थापक अध्यक्ष, ऐमिटी शिक्षण संस्थान) ने कहा कि चरित्रवान आर्य युवा ही देश व विश्व को बदल सकते हैं। उन्होंने कहा कि मैंने यहां आकर देखा कि बच्चों में देशभक्ति, मानवता के प्रति प्रेम व इस समाज को एक अच्छा समाज बनाने की प्रेरणा काम कर रही है।

ऐमिटी स्कूल्स की चेयरपरसन डॉ. अमिता चौहान ने कहा कि शिविर में प्रशिक्षित युवकों को अब समाज में व्याप्त अन्धविश्वास, पाखण्ड व सामाजिक कुरीतियों को मिटा कर एक अच्छे समाज की संरचना का कार्य करना है।

इलाहाबाद हाई कोर्ट के न्यायमूर्ति विनोद कुमार मिश्र ने कहा कि महर्षि दयानन्द समग्र क्रान्ति के अग्रदूत थे उनके स्वप्नों के भारत का निर्माण युवा पीढ़ी को ही करना है।

परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री व शिविर संयोजक महेन्द्र भाई ने कहा कि जीवन में उन्नति के पद पर यदि चलना चाहते हो, तो कल पर किसी काम को मत छोड़ो आज का काम अभी, और कल का काम आज ही कर डालो।

अंकित उपाध्याय द्वारा गाये गये मधुर ईश्वर भक्ति भजन व क्रांतिकारी भजनों से युवकों में उत्साह की लहर पैदा हुई।

इस अवसर पर विमला बाथम (विधायक), आर्य नेता आनन्द चौहान, चौ. लाजपतराय आर्य (करनाल), गायत्री मीना, यशोवीर आर्य, कै. अशोक गुलाटी, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, धर्मपाल आर्य, दुर्गेश आर्य, सुरेश आर्य, डी. के. यादव, एस.डी. त्यागी, सत्यभूषण आर्य, स्वतन्त्र कुकरेजा, आनन्द प्रकाश आर्य, रोजी पण्डित प्रमुख रूप से उपस्थित थे। शिविर में सर्वप्रथम शिविरार्थी आलोक कुमार (यमुना नगर), सर्वद्वितीय अवनीश (गाजियाबाद), सर्वतृतीय मोनु (जीन्द) पुरस्कृत किये गये। भाषण में ओमप्रकाश (बिहार), अशोक भण्डारी (बागेश्वर), अभिमन्यु (शाहदरा) विजेता रहे। समारोह में हजारों लोगों ने पधार कर आर्य युवा शक्ति का उत्साह वर्धन किया।

आर्य वीरांगना दल का चुनाव : दुर्गा शर्मा अध्यक्ष नियुक्त

जयपुर। आर्य वीरांगना दल की नई कार्यकारिणी का शपथग्रहण समारोह राजपार्क के आर्य प्रतिनिधि सभा, भवन में हुआ। दल की नवनियुक्त प्रदेशाध्यक्ष दुर्गा शर्मा ने कहा कि प्रदेश के सभी जिलों में महिलाओं को शारीरिक रूप से सक्षम बनाने व व्यक्तित्व विकास के लिए अभियान चलाया जाएगा। इसके लिए आवासीय शिविर लगाये जाएंगे। इनमें संस्कारों से लेकर लाठी, तलवार चलाने और कराटे का प्रशिक्षण दिया जाएगा। समारोह की शुरुआत यज्ञ से हुई। स्वामी धर्मानन्द महाराज ने शपथ ग्रहण करवाई। दल के कार्यकारी संचालक आचार्य देवेन्द्र शास्त्री ने नियुक्ति पत्र व चिन्ह भेंट किया।

दुर्गा शर्मा को नियुक्ति पत्र देते आचार्य देवेन्द्र शास्त्री -केसरी।

कार्यक्रम का संचालन अनिल आर्य ने किया। दीपक शास्त्री, जवाहरलाल वधवा, श्रीति वीर आर्य और रविना ने भजन पेश किये। मुख्य अतिथि आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री डॉ0 सुधीर शर्मा थे।

आवश्यकता है

आर्यावर्त केसरी को देश के कोने-कोने में संवाददाताओं एवं विज्ञापन प्रतिनिधियों की। पत्रकारिता व जनसम्पर्क में रुचि रखने वाले तुरन्त सम्पर्क करें। मानदेय योग्यता व कार्यक्षमतानुसार-

डॉ० अशोक कुमार आर्य, सम्पादक, फोन : 09412139333

प्रवेश प्रारम्भ

संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से शास्त्री आचार्य तक तथा मा.शि. परिषद उ.प्र., लखनऊ से मध्यमा (कक्षा 12) तक मान्यता प्राप्त गुरुकुल महाविद्यालय, पूठ में प्रवेश प्रारम्भ हैं। प्राचीन तथा आधुनिक शिक्षा के साथ ही धनुर्विद्या, योगासन, प्राणायाम व आर्यवीर दल के विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था है। प्रवेश हेतु शीघ्र सम्पर्क करें-

दिनेश आचार्य	**धर्मेश्वरानन्द सरस्वती**	**आचार्य राजीव**
कार्यालयाध्यक्ष	संचालक	प्राचार्य
(9411029775)	(9837402192)	(9837402192)

गुरुकुल महाविद्यालय, पूठ (हापुड़) उ०प्र०

कार्यक्रम में मंचासीन अतिथिगण -केसरी

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए और चुनिए एक सुयोग्य जीवन साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 350/- तथा तीन बार की रु. 500/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, उ.प्र. (चलभाष : 08273236003)

वैवाहिक कॉलम रिश्ते ही रिश्ते

जरूरत मन्दों को बांटे वस्त्र

हर्ष बवेजा
गाजियाबाद

शम्भूदयाल वैदिक सन्यास आश्रम दयानन्द नगर में आज स्वदेशी फार्मेसी के निदेशक डॉ0 आर0के0 आर्य की प्रेरणा से श्री यतेन्द्र शर्मा के सुपुत्र सन्दर्प वशिष्ठ के 30 वें जन्मदिन को समारोह पूर्वक मनाया गया।

समारोह केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के महामंत्री श्री प्रवीण आर्य के सुमधुर गीत 'प्रभू जी तेरी लीला है अपरम्पार' नामक गीत से प्रारम्भ हुआ। पश्चात यजुर्वेद के 40वें अध्याय के प्रथम मन्त्र की व्याख्या की व बालक को आशीर्वाद प्रदान किया।

डॉ0 आर0के0 आर्य ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि कन्दर्प का जन्मदिन जरूरत मन्दों को वस्त्र बांट कर व भोजन कराकर मनाना सामाजिक परिवेश में सार्थक है और ऐसे कार्य निरंतर होते रहने चाहिये। सन्यास आश्रम में विद्या अध्ययन कर रहे गुरुकुल के छात्र जो कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की विचारधारा से ओत-प्रोत वैदिक मान्यताओं के अनुरूप जीवन यापन कर रहे हैं। ऐसे आश्रमों की सहायता करना हमारा नैतिक दायित्व है ताकि वेद विद्या का प्रचार और प्रसार गति ले सके।

आश्रमाचार्य स्वामी सत्यवेश जी ने बालक को पुष्पवर्षा कर वैदिक मन्त्रोचारण द्वारा आशीर्वाद दिया व माता पिता के प्रति क्या कर्तव्य होने चाहिए पर अपने विचार प्रकट किये। इस अवसर पर इन्द्रा शर्मा, मन्जू शर्मा, पारूल वशिष्ठ, त्रिलोक शास्त्री, अनमोल, राहुल आर्य आदि उपस्थित रहे।

संक्षिप्त समाचार

योग शिविर 27 से

आनन्द धाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर (जम्मू-कश्मीर) में महात्मा चैतन्य मुनि के सान्निध्य में 27 सितम्बर से 4 अक्टूबर 2015 तक योग-ध्यान साधना शिविर लगेगा। यह जानकारी देते हुए प्रधान भारतभूषण आनन्द (मो0 09419107788) ने कहा है कि इच्छुक जन कार्यक्रम के सम्बन्ध में चलभाष पर सम्पर्क कर सकते हैं।

राष्ट्रीय शिविर सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के अन्तर्गत एस एम आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग-दिल्ली में विशाल राष्ट्रीय शिविर 18 से 28 जून तक चला। यह जानकारी साध्वी डॉ0 उत्तमा यति प्रधान संचालिका ने दी है।

ऋषि मेला आयोजित

परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा 14 से 21 जून 2015 तक ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में ऋषि मेले का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर योग साधना शिविर भी आयोजित हुआ। परोपकारिणी सभा के मंत्री डॉ. धर्मवीर के अनुसार इस अवसर पर हजारों श्रद्धालु नर-नारियों ने सहभागिता कर धर्म लाभ उठाया।

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा (उ0प्र0) द्वारा मुद्रित व प्रकाशित

अत्यंत आकर्षक, बहुरंगी कलेवर, तथा उत्तम कागज युक्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ तथा लघु पुस्तकें (ट्रैक्ट्स)

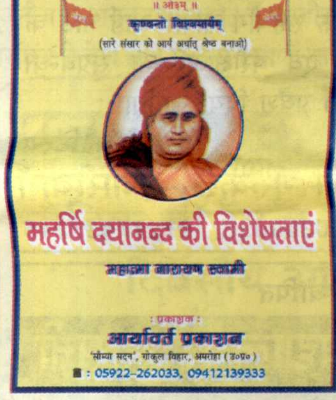

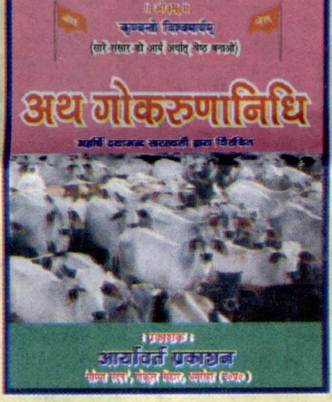

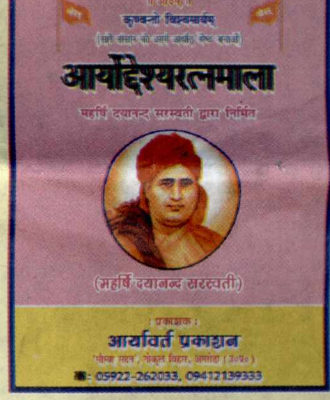

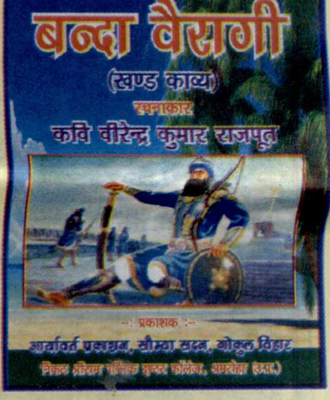

महर्षि दयानन्द की विशेषताएं

यह महात्मा नारायण स्वामी द्वारा ऋषिराज के गौरवमयी व्यक्तित्व व कृतित्व पर महत्वपूर्ण लघु पुस्तिका है।

पृष्ठ- 12, बहुरंगी आर्ट पेपर युक्त टाइटिल, उत्तम कागज, संस्करण- 2015,

मूल्य- 8/-रु0

आर्य समाज की मान्यताएं

आर्य समाज के सिद्धांतों पर महात्मा नारायण स्वामी द्वारा लिखित एक संग्रहणीय, पठनीय व स्तरीय लघु पुस्तिका।

पृष्ठ- 12, बहुरंगी आर्ट पेपर युक्त टाइटिल, उत्तम क्वालिटी का कागज, संस्करण- 2015,

मूल्य- 8/-रु0

अथ गोकरुणानिधिः

इसमें महर्षि दयानन्द ने गऊ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए गोपालन, गोसंवर्द्धन, तथा गो वंश की रक्षा का आह्वान है।

पृष्ठ- 16, बहुरंगी आर्ट पेपर युक्त आकर्षक टाइटिल, उत्तम क्वालिटी का कागज, संस्करण- 2015,

मूल्य- 8/-रु0

आर्योद्देश्यरत्नमाला

महर्षि दयानन्द द्वारा निर्मित इस लघु पुस्तिका में ईश्वर, धर्म-अधर्म, पुण्य-पाप आदि सहित वैदिक सिद्धांतों का सम्यक ज्ञान है।

पृष्ठ- 12, बहुरंगी आर्ट पेपर युक्त आकर्षक टाइटिल, उत्तम क्वालिटी का कागज, संस्करण- 2015,

मूल्य- 8/-रु0

बन्दा वैरागी

कवि वीरेन्द्र कुमार राजपूत ने इस प्रबन्ध काव्य में बन्दा वैरागी की गौरवगाथा का वर्णन किया है।

पृष्ठ- 64, बहुरंगी आर्ट पेपर युक्त टाइटिल, उत्तम कागज, संस्करण- 2015,

मूल्य- 16/-रु0

तो आइए! आज ही आर्यावर्त प्रकाशन के साहित्य प्रचार मिशन से जुड़िए...

■ आज ही बुक कराएं अपना आदेश और घर बैठे पाएं दुर्लभ संग्रहणीय व जीवनोपयोगी बहुमूल्य साहित्य। ■ सभी प्रकाशनों पर 10 प्रतिशत की छूट। सभी पुस्तकें सैकड़ा के हिसाब से लेने पर विशेष छूट। न्यूनतम 500/- रु0 मूल्य तक के क्रय पर डाक-व्यय मुफ्त। आप अपनी अथवा किसी अन्य की कोई भी कृति मुद्रित व प्रकाशित कराने के लिए भी सम्पर्क कर सकते हैं। पता है- डॉ0 अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.) ☎: 05922-262033, 09412139333

आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास शिविर धूम-धाम से सम्पन्न

राष्ट्र रक्षा के लिए संकल्पित हों वीरांगनाएं : स्वामी आर्यवेश

एक भयावह साजिश है लव जिहाद : डॉ. अनिल आर्य

प्रवीण आर्य
हापुड़ (उ0प्र0)।

आर्य कन्या पाठशाला इन्टर कॉलेज, स्वर्गाश्रम रोड हापुड़ में आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास शिविर का भव्य आयोजन किया गया।

शिविर में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश ने कहा कि आज राष्ट्र रक्षा के लिए आर्य वीरांगनाएं संकल्प लेकर आगे बढें, क्योंकि आर्य वीरांगनायें पढ़ाई में प्रथम आती हैं, सेवा में प्रथम रहती हैं, सदाचार में आगे रहती हैं, तो अब समय आ गया है कि राष्ट्र की रक्षा के लिए भी आगे आएं। उन्होंने कहा कि हमारी बहनें अब बॉर्डर पर सैनिक वेश प्रहरी बनकर राष्ट्र रक्षा कर रही हैं। इनके जीवन का उत्साह और आत्म विश्वास इतना बढ़ गया है कि प्रत्येक मोर्चे पर सफलता प्राप्त करेंगी।

सभी अधिकारियों को प्रोत्साहित करते हुये स्वामी जी ने आज आवाहन किया कि कन्या भ्रूण हत्या-नशा खोरी- भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए आगे आएं और ढोंग के खिलाफ, बुराइयों के खिलाफ, गौहत्या के विरोध में धरने और प्रदर्शन किये जायें। अश्लीलता के विरोध में जिलास्तर पर आंदोलन का रूप दिया जाये।

इस अवसर पर स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, प्रांतीय महामंत्री ने इस आंदोलन को प्रदेश स्तर पर चलाये जाने की घोषणा की।

डॉ0 अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद ने देश में बढ़ते हुये इस्लामिक कुचक्र पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि बालिकायें लवजिहाद के प्रति सजक रहें। आज भिन्न-भिन्न नाम बदलकर हिन्दू लड़कियों को अपने जाल में फंसाने का कुचक्र चल रहा है। यह आर्य बालिकायें खुद भी सजक रहेंगी और अन्य बालिकाओं को भी सजक करने का काम करेंगी।

आर्य नेता माया प्रकाश त्यागी ने आवाहन किया कि आर्य समाज आदर्श बालिकाओं का निर्माण करने व आदर्श समाज की संरचना का काम करेगा।

इस अवसर पर नेपाल में आये भूकंप के लिए संग्रहीत 55000 रू की राशी स्वामी आर्य वेश जी को डॉ0 तारा चंद अग्रवाल, एवं जिलासभा के प्रधान विकास आर्य के द्वारा दी गई।

परिषद के उ0प्र0 के प्रांतीय अध्यक्ष आनन्द प्रकाश आर्य ने बताया कि प्रत्येक मास आर्यसमाज मंदिर हापुड़ में एक दिन के लिए शिविर स्मृति रूप में सभी बच्चों द्वारा शाखा लगाई जायेगी।

इस वीरांगना शिविर में बच्चों का कार्यक्रम व्यायाम प्रदर्शन बहुत आकर्षक रहा, जिसकी सभी ने प्रशंसा की। अशोक आर्य मंत्री व विकास अग्रवाल ने मंच का कुशल संचालन किया। इस अवसर पर मुख्य रूप से महेश आर्य, सुंदर लाल आर्य, प्रेम प्रकाश आर्य, बिजेन्द्र गर्ग, ज्ञानेन्द्र चौधरी, नरेन्द्र आर्य, प्रवीण आर्य, कुंवर पाल आर्य ने अतिथियों का सम्मान किया। कार्यकर्ताओं को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में सुलभी आर्या एवं शिक्षिकाओं और बालिकाओं ने अपनी प्रस्तुति से सभी को प्रभावित किया। पूरे जिले से पधारे प्रतिनिधियों ने भाग लिया। शिविर में आर्य महिलाओं का प्रशंसनीय योगदान रहा। परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीण आर्य ने शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा शिलांग के बुक फेयर में स्टॉल

दिल्ली। वैदिक साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने तथा अधिक से अधिक बिक्री करने के उद्देश्य से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा समय-समय पर मेलों तथा प्रदर्शनियों में आर्ष साहित्य के स्टॉल लगाए जाते हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सार्वजनिक स्थलों पर साहित्य प्रचार के अन्तर्गत नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित आर्य समाज शिलांग के सहयोग से पुस्तक मेले का आयोजन किया गया। साहित्य स्टाल का उद्घाटन शिलांग आर्यसमाज के प्रधान श्री विमल कुमार बजाज के कर कमलों द्वारा किया गया। इस पुस्तक मेले में श्री ओम प्रकाश, श्री रवि तिवारी, शिव प्रसाद जी का सहयोग सराहनीय रहा। शिलांग ईसाई बाहुल्य क्षेत्र है यहां आबादी की दृष्टि से मुस्लिमों की संख्या दूसरे नम्बर पर है। ऐसी विषम परिस्थितियों में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक साहित्य के प्रचार का बिगुल बजाना एक सराहनीय कदम है। स्टाल पर पधारे कुछ लोगों का कहना था कि जिस प्रकार हम भारतीय सेना का सम्मान करते हैं उसी प्रकार आर्य समाज व वैदिक साहित्य का भी सम्मान करते हैं।

योग के साथ हुआ यज्ञ

अमित कुमार आर्य
सहारनपुर।

आर्य समाज खेड़ा अफगान में 21 जून (योग दिवस) पर योग शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें सर्वप्रथम यज्ञ किया गया। वेदमंत्रों ने सभी ने आहुतियां दीं। तत्पश्चात् आचार्य रणवीर शास्त्री ने योगासनों एवं प्राणायाम का अभ्यास कराया। उन्होंने युवकों को शंका समाधान करते हुए महर्षि पतंजलि के योग दर्शन का स्वरूप समझाया।

आर्य समाज के प्रधान आदित्य प्रकाश गुप्त ने योग के महत्व पर प्रकाश डाला, और अष्टांग योग के अनुसार अपने जीवन को चलाने पर बल दिया। वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास की ओर से विद्यार्थियों को 'दयानन्द जीवन दर्पण' पुस्तक तथा आर्यजगत साप्ताहिक का एक वर्ष का चन्दा देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर नितिन आर्य, सुमित, आर्यमन आर्य, सचिन विकास कुमार, यशपाल, राजेश कुमार, शशिकान्त गुप्त, वेदभूषण गुप्त, पूनम गुप्ता आदि सहित बड़ी संख्या में युवकों ने भाग लिया। अन्त में प्रधान जी द्वारा धन्यवाद दिया गया।

वार्षिकोत्सव १४ से

भोजपुर खेड़ी (बिजनौर)। आर्यसमाज का 101वां वार्षिक उत्सव 14 से 16 नवम्बर 2015 तक चलेगा। यह जानकारी वैद्य आनन्द प्रकाश आर्य ने दी।

प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के उपरान्त ही विद्यार्थी को कक्षा 6 एवं 7 में योग्यता अनुसार प्रवेश दिया जा सकता है अथवा जिस विद्यार्थी को अन्य विषयों के साथ-साथ अष्टाध्यायी न्यूनतम 4 अध्याय कण्ठस्थ होगी, वह विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा के उत्तीर्ण होने पर कक्षा 8 में भी प्रवेश पा सकता है। भोजन, आवास एवं अध्ययनादि की भी उत्तम व्यवस्था है।

आचार्य स्वदेश, कुलाधिपति (चलभाष : 9456811519)
आचार्य हरिप्रकाश, प्राचार्य (9457333425, 9837643458)

गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन (मथुरा)

प्रवेश प्रारम्भ

आर्य समाज हजारीबाग द्वारा संचालित आर्ष कन्या गुरुकुल, में प्रवेश लिया जा रहा है। प्रवेशार्थ कन्याओं की अवस्था 9 से 12 वर्ष। कक्षा स्तर चतुर्थ, पाँचवी, छठी। आर्ष पाठ विधि के आधार पर विदुषी बनाने की तीव्र इच्छा रखने वाले ही माता-पिता अपनी कन्याओं को प्रवेश दिलायें। सहयोग- असमर्थ कन्याओं के लिए नि:शुल्क प्रबन्ध एवं समर्थ कन्याओं के लिए केवल 500 रु. मासिक सहयोग राशि। आर्ष पाठ के साथ-साथ आधुनिक विषयों, भाषाओं एवं परीक्षाओं का सुप्रबन्ध। कन्याओं की योग्यता परीक्षण के उपरान्त प्रवेश दिया जायेगा।

आचार्य कौटिल्य
आर्ष कन्या गुरुकुल, हजारीबाग
फोन : 06546-263706, 09430309525, 07277437245

सन् १९०९ में स्थापित
कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, सासनी
पत्रालय : कन्या गुरुकुल, सासनी (हाथरस) उ0प्र0- २०४१०४

प्रवेश प्रारम्भ

◆ कक्षा शिशु से कक्षा नवम तक। ◆ विद्याविनोद प्रथम वर्ष (11), उत्तर मध्यमा प्रथम वर्ष (11) ◆ विद्याविनोद (समकक्ष इण्टर) तक विज्ञान वर्ग की भी शिक्षा। ◆ विद्यालंकार/ वेदालंकार प्रथम वर्ष, शास्त्री प्रथम वर्ष। ◆ आचार्य प्रथम वर्ष। ◆ प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद की गायन, वादन में संगीत प्रभाकर तक की परीक्षा। ◆ आई0टी0आई0 (एन0सी0वी0टी0) कम्प्यूटर (कोपा) (कक्षा 10 विज्ञान विषय सहित/ इण्टर मीडिएट उत्तीर्ण) एवं कटिंग स्वीईंग (कक्षा 8 उत्तीर्ण) एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम के अगस्त माह में प्रवेश प्रारम्भ होंगे। ◆ प्रारम्भ से ही हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी अनिवार्य। प्राचीन विषयों के साथ-साथ आधुनिक विषयों की शिक्षा ◆ छात्रावास की उत्तम व्यवस्था।

➔ रु0 150.00 भेजकर नियमावली मंगाएं। कन्या गुरुकुल अलीगढ़-आगरा मार्ग पर सासनी हाथरस के मध्य स्थित है।
डॉ0 पवित्रा विद्यालंकार, मुख्याधिष्ठात्री एवं आचार्या
मोबा. : 09458480781, 09627040999, 09258040119

कारगिल शहीद अरविंद सिंह की स्मृति में आयोजित हवन में शहीद के माता-पिता आहुति देते-केसरी

आर्य उप प्रतिनिधि सभा ने मनाया बलिदान दिवस

कारगिल शहीद अरविन्द सिंह की १६वीं पुण्यतिथि पर हवन का आयोजन

डॉ. नवाब सिद्दीकी
अमरोहा

कारगिल शहीद अरविन्द सिंह की १६वीं पुण्यतिथि के अवसर पर हवन हुआ और शहीद को श्रद्धासुमन अर्पित किए गए।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में गांव छावी मिलक स्थित शहीद स्मारक पर १६वीं पुण्यतिथि पर कारगिल शहीद अरविंद बलिदान दिवस मनाया गया। प्रातः सात बजे हवन और नौ बजे भजन एवं श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। यज्ञ के अधिष्ठाता ने यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि एमएलसी डा. जयपाल सिंह व्यस्त ने कहा कि देश के लिए शहादत देने वाले सदैव पूजनीय व अनुकरणीय होते हैं। शहीद अरविंद ने देश हित में अपने प्राणों का उत्सर्ग किया है। सारा देश उनके बलिदान का ऋणी रहेगा। इससे पूर्व शहीद अरविंद की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई। इस मौके पर शहीद के पिता मुख्तार सिंह, भाई धर्मेन्द्र चौधरी, स्वतंत्रता सैनानी डालचंद, कांठ विधायक अनीसुर्रहान सैफी, गन्ना सोसायटी के चेयरमैन भगत सिंह बॉबी, देवराज सिंह, भूप सिंह, अभय चौधरी, मंगू सिंह आर्य, हरिश्चंद आर्य, कृषक इंटर कालेज के सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य जयपाल सिंह, राजवीर, जवाहर नवोदय विद्यालय के प्रधानाचार्य जयनारायण सिंह, शिवराज सिंह, भाजपा जिलाध्यक्ष गिरीश त्यागी, डॉ. हरि सिंह ढिल्लो, युद्धवीर सिंह, हरिओम यादव, विमल किशोर वंदेमातरत, कैलाश त्यागी, डा.नरेंद्र सिंह, मास्टर हरज्ञान सिंह, कपिल यादव, मनीष पंघाल, शीशराम आर्य, पूरन सिंह मौजूद थे।

२ अगस्त को होगी बैठक

अमरोहा। आर्य उप्रतिनिधि सभा की अंतरंग सभा की बैठक अब 02 अगस्त को आर्यसमाज, हसनपुर में होगी। ज्ञातव्य है कि अत्यधिक वर्षा के कारण 12 जुलाई को होने वाली बैठक स्थगित कर दी गयी।

आवश्यकता है

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को ऐसे पुरोहितों की आवश्यकता है, जो सामान्य यज्ञ को विधि -विधान पूर्वक करा सकें। शीघ्र संपर्क करें- संदीप आर्य
मो0 :09650183339, ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

हार्दिक श्रद्धांजलि

संघ प्रचारक व पत्रयात्री शरद लघाटे का निधन

विनोद बंसल
नई दिल्ली।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक, विश्व हिन्दू परिषद के पदाधिकारी तथा पत्र यात्री के नाम से ख्याति प्राप्त शरद लघाटे (75) का दिल्ली के सफदरजंग हस्पताल में 30 मई को निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। विस्तृत जानकारी देते हुए विहिप प्रवक्ता विनोद बंसल ने बताया कि शरद लघाटे का जन्म 12 अक्तूबर, 1940 को इगतपुरी (महाराष्ट्र) में श्री दत्तात्रेय एवं श्रीमती सुशीला देवी के घर में हुआ था। उनके पिताजी उन दिनों इगतपुरी से भुसावल के बीच चलने वाली रेलगाड़ी के चालक थे। मूलतः कोंकण निवासी यह परिवार बाद में ग्वालियर आ गया। वे 1958 में प्रचारक बने। सर्वप्रथम उन्हें मुरैना नगर और दो वर्ष बाद वहीं जिला प्रचारक की जिम्मेदारी दी गयी।

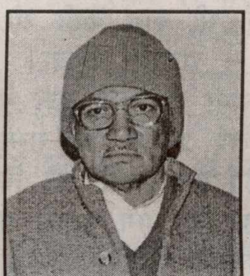

इसके बाद उन्हें मंदसौर जिले का काम दिया गया। पूरे जिले में वे साइकिल से घूमते थे। मंदसौर में वे कई वर्ष रहे। 1975 में आपातकाल लगने पर वे वहीं थे। फिर उन्हें भोपाल बुला लिया गया। आपातकाल के बाद वे भोपाल में ही रहकर प्रांत कार्यवाह इसराणी जी के सहायक के नाते उनका पत्र–व्यवहार देखने लगे। आपातकाल के बाद उन्हें विश्व हिन्दू परिषद के काम से मुंबई भेजा गया। जहां उन्होंने 'संस्कृति रक्षा निधि' का कार्य देखा। इसके बाद आचार्य गिरिराज किशोर जी उन्हें दिल्ली में केन्द्रीय कार्यालय पर ले आये और उन्होंने केन्द्रीय कार्यालय का हिसाब–किताब संभाल लिया।

उनकी 'मेरी पत्र–यात्रा' नामक पुस्तक सभी नये पत्र लेखकों के लिए मार्गदर्शक है।

आर्य माता का निधन

कोटा (राजस्थान)। आर्य समाज के विद्वान पं0 रामदत्त शर्मा की माता श्रीमती शकुन्तला शर्मा के आकस्मिक निधन पर आर्यजनों ने गहन शोक प्रकट किया। वे 95 वर्ष की थीं। जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, पं0 विरधीचन्द्र शास्त्री, कैलास बाहेती, जेएस दुबे, प्रेमनाथ कौशल आदि ने दिवंगत आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की।

ऋषि कुमार नहीं रहे

चम्बा (हि0प्र0)। दयानन्द मठ, चम्बा के कर्मठ कार्यकर्ता व आचार्य महावीर जी के एकमात्र पुत्र 34 वर्षीय ऋषि कुमार का लुधियाना के दयानन्द मेडिकल कालेज में 24 मई का हृदयाघात से असामयिक निधन हो गया। वे एक बेहद उत्साही, कर्मठ, होनहार तथा राष्ट्रसेवा में निष्काम रूप से समर्पित नवयुवक थे। हार्दिक श्रद्धांजलि।

राजस्थान के दो सौ से अधिक आर्य युवक-युवतियों को दी कमांडो ट्रेनिंग

वैदिक वीरांगना दल ने लगाया सात दिवसीय आवासीय शिविर

अनामिका शर्मा
जयपुर

वैदिक वीरांगना दल की राजस्थान शाखा द्वारा जयपुर में सम्पूर्ण राजस्थान के आर्य युवक–युवतियों का व्यक्तित्व विकास, आत्मरक्षा एवं ध्यानोपासना शिविर लगाया गया। सात दिवसीय आवासीय शिविर में शिविरार्थियों के लिए आवास, दोनों समय भोजन, दूध, फल, नाश्ता आदि की समस्त व्यवस्थाएं पूर्णतः निःशुल्क थी।

वैदिक वीरांगना दल की राष्ट्रीय अध्यक्ष अनामिका शर्मा ने बताया कि सम्पूर्ण राजस्थान से दो सौ से अधिक युवक–युवतियों ने इस शिविर में भाग लिया। शिविरार्थियों को प्रतिदिन सुबह 4 बजे से रात 10 बजे तक विभिन्न सत्रों में ध्यानोपासना, योग, कराटे, मार्शल आर्ट, लाठी संचालन, तलवार संचालन एवं कमांडो ट्रेनिंग दी गई व पर्सनेलिटी डवलपमेंट के विभिन्न गुर सिखाए गए। शिविरार्थियों को विभिन्न क्षेत्र के विद्वानों द्वारा वेद, दर्शन, उपनिषद से लेकर आधुनिक वैज्ञानिक जगत का ज्ञान कराया गया। धर्म एवं संस्कृति की व्यवहारिक शिक्षा वैदिक विद्वानों द्वारा दी गई।

इस शिविर में राजस्थान के प्रसिद्ध उद्योगपति, नेता, अधिकारी, समाजसेवी, साहित्यकार, कानूनविद् व ब्यूरोक्रेट्स को भी आमंत्रित किया गया। मालवीय नगर के विशाल अग्रसेन भवन में आयोजित इस शिविर के दौरान प्रतिदिन प्रभात फेरी निकाली गई जिसमें शिविरार्थियों ने वैदिक जय–घोष से सम्पूर्ण क्षेत्र को गुंजायमान कर दिया। हरियाणा, दिल्ली व उत्तर प्रदेश से आए प्रशिक्षित कमांडोज ने शिविरार्थियों को उच्च स्तरीय कमांडो ट्रेनिंग दी। वैदिक वीरांगना दल की संरक्षिका दुर्गा शर्मा ने बताया कि अगले वर्ष यह शिविर राष्ट्रीय स्तर का लगाया जाएगा और देश के हर प्रांत से एक दर्जन युवक–युवतियों को प्रशिक्षित किया जाएगा ताकि वे अपने प्रांत में जाकर वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार का नेतृत्व कर सकें।

वैदिक वीरांगना दल के शिविर के अवसर पर अतिथिगण -केसरी।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस प्रधानमंत्री मोदी को बधाई

संयुक्त राष्ट्र ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाए जाने के भारत के प्रस्ताव पर अपनी मोहर लगाकर एक नये युग का सूत्रपात किया है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने यूएनओ में दिये गये अपने संबोधन में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने की जोरदार पैरवी की थी। इस प्रस्ताव में उन्होंने 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मान्यता दिए जाने की भी बात कही थी। मोदी की इस पहल का 177 देशों ने समर्थन किया।

संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने इस भाषण में मोदी ने कहा कि भारत के लिए प्रकृति का सम्मान, आध्यात्मवाद का अनिवार्य हिस्सा है। हम प्रकृति की विपुलता को पवित्र मानते हैं। उन्होंने कहा कि योग हमारी प्राचीन परंपरा का अमूल्य उपहार है। उन्होंने कहा कि योग मन और शरीर को, विचार और कार्य को, अवरोध और सिद्धि को साकार रूप प्रदान करता है और यह व्यक्ति और प्रकृति के बीच सामंजस्य बनाता है। यह स्वास्थ्य को अखंड स्वरूप प्रदान करता है। इसमें केवल व्यायाम नहीं है, बल्कि यह प्रकृति और मनुष्य के बीच की कड़ी है। यह जलवायु परिवर्तन से लड़ने में हमारी मदद करता है। इसी बीच नई दिल्ली मे प्रधानमंत्री ने संयुक्तराष्ट्र महासभा द्वारा 21 जून को अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाए जाने के फैसले का स्वागत करते हुए कहा कि इस फैसले को सुनकर वह इतने प्रसन्न हैं कि उनके पास अपनी प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए शब्द तक नही हैं। वे उन सभी 177 देशों का हार्दिक धन्यवाद देते हैं, जो इस प्रस्ताव के प्रायोजक बने। नई दिल्ली में प्रधानमंत्री ने कहा कि योग में समूची मानवता को एकजुट करने की अद्भुत शक्ति है, यह ज्ञान कर्म और भक्ति का सुन्दर मेल है। उन्होंने कहा कि दुनिया में असंख्य लोगों ने योग को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाया है, वे उन सभी को बधाई देते हैं। निश्चय ही अब और अधिक लोग योग के प्रति आकर्षित होंगे।

गौरतलब है कि संयुक्त राष्ट्र महासभा में प्रधानमंत्री की पहल के बाद संयुक्त राष्ट्र स्थित भारत के स्थायी मिशन ने सभी 193 देशों को अनौपचारिक रूप से प्रस्ताव की बाबत समझाया। विचार–विमर्श के बाद 22 अक्टूबर 2014 को प्रस्ताव के अंतिम मसौदे को सहमति दे दी गई।

5 दिसंबर तक 177 देश इस प्रस्ताव के प्रायोजक बन गए थे। प्रस्ताव के सहप्रायोजकों में संयुक्तराष्ट्र सुरक्षा परिषद के 5 स्थाई सदस्य भी थे। संयुक्तराष्ट्र महासचिव बान की मून ने भी इस प्रस्ताव को मंजूरी मिल जाने पर बधाई दी है। संयुक्तराष्ट्र में भारत के स्थाई प्रतिनिधि अशोक कुमार मुखर्जी ने भी सभी सदस्य देशों के प्रतिनिधियों का आभार जताया। उन्होंने कहा कि यह बात इसलिए और भी महत्वपूर्ण हो गई है कि इतने कम समय मे प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया गया है।

भारतीय संस्कृति में पहले जन्मी योग पद्धति के चाहने वाले पूरी दुनिया में हैं। योग हमेशा से ही विदेशियों को प्रभावित करता आया है। अमेरिका सहित यूरोप में लाखों लोग नियमित योग करते हैं तो वहीं योग सीखने की ललक कई विदेशियों को भारत की ओर खींचती रही है।

भारत सहित विश्व भर में 21 जून का अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस का कार्यक्रम अभूतपूर्व उत्साह के साथ मनाया गया। विश्व भर में योग का नाद गुंजित हुआ तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जनमानस तक यह संदेश पहुंचा कि योग युक्त विश्व से ही रोग मुक्त विश्व की संरचना हो सकती है। भारत की परम्परागत योग एवं प्रणायाम पद्धति ने लोगों को यह मानने के लिए विवश कर दिया है कि अष्टांग योग तथा प्रणायाम की प्रक्रिया से अभूतपूर्व सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी को बधाई। भारत के जन–जन सहित विश्व भर के योग प्रेमियों का कोटि–कोटि अभिनन्दन।

गो आदि के हत्यारे सबसे बड़े विश्वासघाती व पापी

इस स्तंभ में महर्षि दयानन्दकृत गोकरुणानिधि से सामग्री प्रकाशित की जा रही है। क्रमशः पढ़ें (२)

गतांक के आगे-

इसीलिए यजुर्वेद के प्रथम ही मन्त्र में परमात्मा की आज्ञा है कि 'अघ्न्याः यजमानस्य पशून पाहि' हे पुरुष! तू इन पशुओं को कभी मत मार, और यजमान अर्थात् सबके सुख देने वाले जनों के सम्बन्धी पशुओं की रक्षा कर, जिनसे तेरी भी पूरी रक्षा होवे। और इसलिए ब्रह्मा से लेके आज पर्यन्त आर्य लोग पशुओं की हिंसा में पाप और अधर्म समझते थे और अब भी समझते हैं। और इनकी रक्षा में अन्न भी मंहगा नहीं होता, क्योंकि दूध आदि से अधिक होने से दरिद्री को भी खान पान में मिलने पर कम ही कम खाया जाता है और अन्न के कम खाने से मल भी कम होता है, मल के कम होने से दुर्गन्ध भी कम होती है, दुर्गन्ध के स्वल्प होने से वायु और वृष्टि जल की शुद्धि भी विशेष होती है, उससे रोगों की न्यूनता होने से सबको सुख बढ़ता है। इनसे यह ठीक है कि गो आदि पशुओं के नाश होने से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है, क्योंकि जब पशु कम होते हैं तब दूध आदि पदार्थ और खेती आदि कार्यों की भी घटती होती है। देखो, इसी से जितने मूल्य से जितना दूध और घी आदि पदार्थ तथा बैल आदि पशु 700 वर्ष के पूर्व मिलते थे उतना दूध घी और बैल आदि पशु इस समय दशगुणा मूल्य से भी नहीं मिल सकते, क्योंकि 700 वर्ष के पीछे इस देश में गवादि पशुओं को मारने वाले मांसाहारी विदेशी मनुष्य बहुत आ बसे हैं, वे उन सर्वोपकारी पशुओं के हाड़ मांस तक भी नहीं छोड़ते तो (नष्टे मूले पत्रं न पुष्पम) जब कारण का नाश कर दें तो कार्य नष्ट क्यों न हो जावे? हे मांसाहारियों! तुम लोग जब कुछ काल के पश्चात पशु न मिलेगें तब मनुष्यों का मांस भी छोड़ोगे या नहीं? हे परमेश्वर! तू क्यों न इन पशुओं पर, जो कि बिना अपराध मारे जाते हैं दया नहीं करता? क्या उन पर तेरी प्रीति नहीं है? क्या इनके लिए तेरी न्याय सभा बन्द हो गई है? क्यों उनकी पीड़ा छुड़ाने पर ध्यान नहीं देता और उनकी पुकार नहीं सुनता, क्यों इन मांसाहारियों के आत्माओं में दया प्रकाश कर निष्ठुरता, कठोरता, स्वार्थपन और मूर्खता आदि दोषों को दूर नहीं करता? जिससे ये इन बुरे कामों से बचें।

अथ समीक्षायां हिंसक-रक्षक संवादः

हिंसक-ईश्वर ने सब कुछ पशु आदि सृष्टि मनुष्यों के लिए रची है और मनुष्य अपनी भक्ति के लिए, इसलिए मांस खाने में दोष नहीं हो सकता।

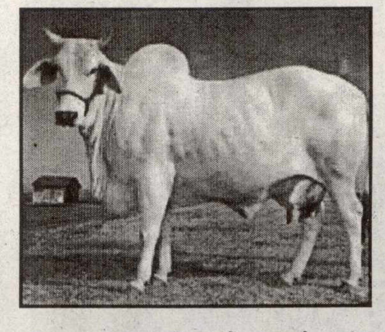

रक्षक-भाई! सुनो, तुम्हारे शरीर को जिस ईश्वर ने बनाया है, क्या उसी ने पशु आदि के शरीर नहीं बनाये हैं? जो तुम कहो कि पशु आदि हमारे खाने को बनाये हैं, तो हम कह सकते हैं कि हिंसक पशुओं के लिए तुमको उसने रचा है, क्योंकि जैसे तुम्हारा चित्त उनके मांस पर चलता है वैसे ही सिंह गृध्र आदि का चित्त भी तुम्हारे मांस खाने पर चलता है तो उनके लिए तुम क्यों नहीं?

हिं.- देखो! ईश्वर ने पुरुषों के दांत कैसे पैने मांसाहारी पशुओं के समान बनाए है इससे हम जानते है कि मनुष्य को मांस खाना उचित है।

र.- जिन व्याघ्रादि पशुओं के दांत के दृष्टान्त से अपना पक्ष सिद्ध करना चाहते हो, क्या तुम भी उनके तुल्य ही हो? देखो तुम्हारी मनुष्य जाति उनकी पशु जाति, तुम्हारे दो पग और उनके चार, तुम विद्या पढ़ कर सत्यासत्य का विवेक कर सकते हो वे नहीं। और यह तुम्हारा दृष्टान्त भी युक्त नहीं, क्योंकि जो दांत का दृष्टान्त लेते हो तो बंदर के दांतो का दृष्टांत क्यों नहीं लेते! देखो बंदरों के दांत सिंह और बिल्ली आदि के समान हैं और वे मांस नही खाते। मनुष्य और बंदर की आकृति भी बहुत सी मिलती है, जैसे मनुष्य के हाथ पग और नख आदि होते है वैसे ही बंदरों के भी है। इसलिए परमेश्वर ने मनुष्यों को दृष्टांत से उपदेश किया है कि जैसे बंदर कभी मांस नहीं खाते और फलादि खाकर निर्वाह करते हैं, वैसे तुम भी किया करो। जैसा बंदरों का दृष्टांत सांगोपांग मनुष्यों के साथ घटता है वैसा अन्य किसी का नहीं। इसलिए मनुष्यों को अति उचित है कि मांस खाना सर्वथा छोड़ देवें।

हि.- देखो, जो मांसाहारी पशु और मनुष्य हैं वे बलवान् और जो मांस नहीं खाते हैं, वे निर्बल होते हैं, इससे मांस खाना चाहिए।

र.- क्यों अल्प समझ की बातें मानकर कुछ भी बिचार नहीं करते। देखो सिंह मांस खाता और सुअर व अरणा भैंसा मांस कभी नहीं खाता, परन्तु जो सिंह बहुत मनुष्यों के समुदाय में गिरे तो एक या दो को मारता और एक दो गोली या तलवार के प्रहार से मर भी जाता है और जब जंगली सुअर व अरणा भैंसा जिस प्राणी समुदाय में गिरता है, तब उन अनेक सवारों और मनुष्यों को मारता और अनेक गोली, बरछी तथा तलवार आदि के प्रहार से भी शीघ्र नहीं गिरता और सिंह उनसे डरके अलग सटक जाता है और वह सिंह से नहीं डरता। और जो प्रत्यक्ष दृष्टांत देखना चाहो तो एक मांसाहारी का एक दूध घी और अन्नहारी मथुरा के मल्ल चौबे से बाहुयुद्ध हो तो अनुमान है कि चौबा मांसाहारी को पटक उसकी छाती पर चढ़ ही बैठेगा, पुनः परीक्षा होगी कि किस किस के खाने से बल कम और अधिक होता है। भला, तनिक विचार करो कि छिलकों के खाने से अधिक बल होता है अथवा रस जो सार है उसके खाने से? मांस छिलके समान और दूध घी सार रस के तुल्य है इसको जो युक्तिपूर्वक खावे तो मांस से अधिक गुण और बलकारी होता है, फिर मांस का खाना व्यर्थ और हानिकारक, अन्याय, अधर्म और दुष्ट कर्म क्यों नहीं?

हिं.- जिस देश में सिवाय मांस के अन्य कुछ नहीं मिलता वहां व आपत्काल में अथवा रोगनिवृत्ति के लिए मांस खाने में दोष नहीं होता।

र.- वह आपका कहना व्यर्थ है क्योंकि जहां मनुष्य रहते हैं वहां पृथ्वी अवश्य होती है, जहां पृथ्वी है वहां खेती व फल फूल आदि होते हैं, और जहां कुछ भी नहीं होता, वहां मनुष्य भी नहीं रह सकते। और जहां ऊसर भूमि है वहां मिष्टजल और फलाहारादि के न होने से मनुष्यों का रहना भी दुर्घट है और आपातकाल में भी अन्य उपायों से भी निर्वाह कर सकते हैं जैसे मांस के न खाने वाले करते है और बिना मांस के रोगों का निवारण भी औषधियों से यथावत् होता है इसलिए मांस खाना अच्छा नहीं।

हि.- जो कोई भी मांस न खावे तो पशु इतने बढ़ जायें कि पृथ्वी पर भी न समावें, और इसलिए ईश्वर ने उनकी उत्पत्ति भी अधिक की है तो मांस क्यों न खाना चाहिए?

र.- वाह! वाह! यह बुद्धि का विपयास आपको मांसाहार ही से हुआ होगा। देखो मनुष्य का मांस कोई नहीं खाता, पुनः क्यों न बढ़ गये, और इनकी उत्पत्ति इसलिए है कि एक मनुष्य के पालन व्यवहार में अनेक पशुओं की अपेक्षा है इसलिए ईश्वर ने उनको अधिक उत्पन्न किया है।

हि.- ये जितने उत्तर किये, वे सब व्यवहार सम्बन्धी हैं परन्तु पशुओं को मार के मांस खाने में अधर्म तो नहीं होता और जब होता है तो तुमको होता होगा क्योंकि तुम्हारे मत में निषेध है इसलिए तुम मत खाओ और हम खावें, क्योंकि हमारे मत में मांस खाना अधर्म नहीं है।.....

शेष अगले अंकों में.....

ताकि रोजगार मिले

परिवर्तन के युग में बढ़ती प्रतिस्पर्धा में जहां एक तरफ रोजगार के अवसर लगातार बढ़ रहे हैं, वहीं दूसरी ओर तकनीकी शिक्षा के तमाम अवसरों में भी इजाफे हो रहे हैं। ग्रामीण से लेकर औद्योगिक जगत में आज तकनीकी विशेषज्ञों की डिमांड लगातार बढ़ती जा रही है। वैश्विक तकनीकी में हो रहे नित परिवर्तनों को देखते हुए आईटी कम्पनियाँ भी हर क्षेत्र में उतरते हुए प्रशिक्षणार्थियों को ट्रेंड बनाने में लगी हुई हैं, लेकिन इसे भारत के युवा वर्ग की बदनसीबी ही कहा जाये कि आज भी शिक्षा जगत से तकनीकी शिक्षा क्रांति को दूर रखा गया है, जिसके चलते तकनीकी शिक्षण संस्थानों की भरमार होने के बावजूद भी देश का करीब 60 फीसदी युवा वर्ग अभी भी इनसे दूर है। फिर करेला नीम चढ़ा की कहावत को चरितार्थ करते हुए सिर्फ कमाई के उद्देश्य से तकनीकी शिक्षण संस्थानों की बाढ़ तो आयी लेकिन इनमें नियुक्त प्रशिक्षकों को सम्पूर्ण तकनीकी ज्ञान नहीं होता। ऐसी स्थिति में जो युवा इन संस्थानों से प्रशिक्षण लेकर निकलते हैं तो प्रोद्योगिक तौर पर नौकरियों का साक्षात्कार देने पहुंचते हैं तो वह अपने आपको उक्त कार्य में दक्ष नहीं पाते।

अतुल कुमार शुक्ला, मुरादाबाद

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर दीप प्रज्ज्वलन करते अतिथिगण -केसरी

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया

दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर दिल्ली की समस्त आर्य समाजों ने सामूहिक रूप से एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, दिल्ली के प्रांगण में योग दिवस का विशाल आयोजन किया जिसमें सैंकड़ो की तादात में बच्चों, महिलाओं व आर्य जनों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया व सामूहिक रूप से ध्यान एवं योगासनों का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी उत्तमायति के सानिन्ध्य में हुआ व दिल्ली के विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारियों ने योग को अपने जीवन में आजीवन अपनाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने योग के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सभा दिल्ली की प्रत्येक आर्यसमाज में योग कक्षा की व्यवस्था करने सम्बन्धी इकाई का गठन करने करेगी। महामंत्री श्री विनय आर्य ने योग के लाभों से अवगत कराते हुए कहा कि योग हमारे समाज में प्राचीन काल से सक्रिय है। आचार्य पतंजलि ने सर्वप्रथम योग के महत्व को समझा था और उन्होंने योग विद्या को विकसित किया। हजारों साल पुरानी इस साधना को हम विकास की दौड़ में भूलते जा रहे थे जिसे माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने दिसम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र संघ की बैठक में एक प्रस्ताव के रूप में रखा जिसे तत्काल 175 देशों ने सहर्ष स्वीकार करते हुए 21 जून 2015 को प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने की सम्मति प्रदान कर दी। यह हमारे देश के लिए, हमारे समाज के लिए विशेष कर आर्य जनों के लिए गौरव की बात है। हम आज जिस कार्यक्रम की पुनः राष्ट्र भावना के साथ शुरुआत कर रहे हैं उसकी धारा अविरल निरंतर बहती रहेगी। योग दिवस के इस कार्यक्रम में बच्चों व महिलाओं का विशेष उत्साह देखने को मिला। समारोह में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान धर्मपाल आर्य, महामन्त्री विनय आर्य, उप प्रधान ओम प्रकाश आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के महामन्त्री राजीव आर्य, विद्यालय प्रधान सत्यानन्द आर्य, वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली के प्रधान रविदेव गुप्ता, मीडिया प्रभारी राजेन्द्र दुर्गा आदि रहे।

सम्मानित पाठक कृपया ध्यान दें

यदि केसरी न मिले तो

सम्मानित सदस्यों! आर्यावर्त केसरी आपकी सेवा में प्रत्येक माह की ०१ व १६ तारीख को प्रेषित किया जाता है। दस दिन तक न मिलने पर कृपया दूरभाष पर अवगत कराएं, पुनः प्रेषित किया जायेगा। कहीं-कहीं से ऐसी शिकायतें भी मिलती हैं कि उन्हें आर्यावर्त केसरी लम्बे समय से नहीं मिला है या सदस्यता सहयोग दिये जाने के बाद भी नहीं मिल रहा है, तो इस विषय में अमरोहा- कार्यालय से दूरभाष पर पुष्टि करने के बाद कृपया सम्बन्धित डाकघर के पोस्टमास्टर, अथवा सम्भव हो तो प्रवर अधीक्षक डाकघर- संबंधित प्रखण्ड, से भी इसकी शिकायत करें। हम तो, अपने स्तर पर समुचित कार्यवाही करेंगे ही, ताकि आपको केसरी यथासमय मिलता रहे और डाक के वितरण में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी न हो।

-डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)
फोन- 05922-262033, 09758833783

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा मुद्रित व प्रकाशित लघु पुस्तकें

तारा टूटा

गुरुदत्त विद्यार्थी की गौरवगाथा पर आधारित कवि वीरेन्द्र कुमार राजपूत का प्रबन्ध काव्य।

पृष्ठ– 52, बहुरंगी आर्ट पेपर युक्त टाइटिल, उत्तम क्वालिटी का कागज, संस्करण– 2015,
मूल्य– 14/–रु0

क्रान्ति

डॉ. आनन्द सुमन सिंह द्वारा लिखित एक संग्रहणीय, पठनीय व स्तरीय लघु पुस्तक।

पृष्ठ– 56, बहुरंगी आर्ट पेपर युक्त टाइटिल, उत्तम क्वालिटी का कागज, संस्करण– 2015,
मूल्य– 20/–रु0

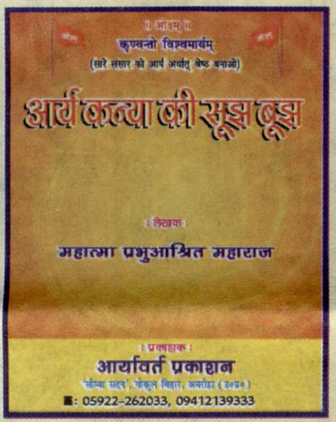

आर्य कन्या की सूझ-बूझ

महात्मा प्रभुआश्रित महाराज द्वारा लिखित एक अनूठी लघु पुस्तिका, जो प्रत्येक घर में होनी चाहिए।

पृष्ठ– 16, बहुरंगी आर्ट पेपर युक्त आकर्षक टाइटिल, उत्तम क्वालिटी का कागज, संस्करण– 2015,
मूल्य– 5/–रु0

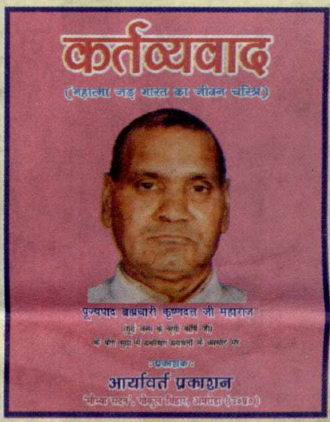

कर्तव्यवाद

पूज्यपाद ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी द्वारा योग मुद्रा में प्रकथित महात्मा जड़ भरत का जीवन चरित्र।

पृष्ठ– 40, बहुरंगी आर्ट पेपर युक्त आकर्षक टाइटिल, उत्तम क्वालिटी का कागज, संस्करण– 2015,
मूल्य– 14/–रु0

अन्त्येष्टि संस्कार विधि

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत संस्कार विधि के आधार पर यह लघु पुस्तक प्रस्तुत की गयी है।

पृष्ठ– 12, बहुरंगी आर्ट पेपर युक्त टाइटिल, उत्तम क्वालिटी का कागज, संस्करण– 2015,
मूल्य– 8/–रु0

तो आइए! आज ही आर्यावर्त प्रकाशन के साहित्य प्रचार मिशन से जुड़िए...

■ आर्यसमाजों, गुरुकुलों, विद्यालय-महाविद्यालयों, आर्य-संस्थानों में प्रचारार्थ उपलब्ध होना चाहिए आर्ष साहित्य। ■ उत्सवों, पर्वों, पारिवारिक अथवा सार्वजनिक समारोहों में वितरण हेतु सैकड़ों व हजारों की संख्या में आज ही भेजिए अपना आदेश। ■ कोई भी पुस्तक न्यूनतम 500 लेने पर वितरक के रूप में आपके अथवा आपके संस्थान के नाम/ फोटो के प्रकाशन की विशेष सुविधा उपलब्ध। ■ आज ही बुक कराएं अपना आदेश और घर बैठे पाएं दुर्लभ संग्रहणीय व जीवनोपयोगी बहुमूल्य साहित्य।

पता है– डॉ0 अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा–244221 (उ.प्र.) ☎: 05922–262033, 09412139333

आर्य समाज गुंधनी में यज्ञ महोत्सव की रही धूम

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' के नाद के साथ संपन्न हुआ महोत्सव

वैदिक संस्कारशाला-गुंधनी की बेटियों को कंठस्थ हैं पूरी अष्टाध्यायी व गीता सहित वेदों के कई-कई अध्याय

हजारों श्रद्धालुओं ने दी ऋग्वेद पारायण महायज्ञ में आहुति

- आगामी वर्ष २०१५-१६ के लिए किया यजुर्वेद परायण महायज्ञ का शुभारंभ
- वृक्षारोपण, पर्यावरण, बेटी बचाओ के साथ ही शराब, जुआ व दहेज विरोधी नारों की पट्टिकाओं से सज्जित था पंडाल व पूरा गुंधनी गांव
- गुंधनी में आर्यवीर दल ने किया शानदार प्रदर्शन
- भव्य शोभायात्रा ने मोहा सभी का मन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान देवेंद्र पाल वर्मा व आचार्य संजीव रूप के साथ अन्य-केसरी

झलकियां

प्रात: ५ बजे से रात्रि १ बजे तक चलता था कार्यक्रम

पूरा गांव ही हो गया यज्ञमय

रंग बिरंगे आकर्षक व शिक्षाप्रद फ्लैक्सियों व होर्डिंग से अटा था पंडाल व गांव

समारोह स्थल पर उपस्थित होता था मेले जैसे माहौल

अंतिम दिन हजारों लोगों ने विशाल भंडारे में ग्रहण किया यज्ञ-प्रसाद

आचार्य संजीव रूप व पत्नी प्रज्ञा आर्या तथा बच्चों सहित अनेक युवक-युवतियों ने दिन रात किया एक

प्रज्ञा आर्या
गुंधनी (बदायूं)

जिला बदायूं, बिल्सी तहसील के ग्राम गुधनी में आर्यसमाज के 101वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर यज्ञ महोत्सव-2015 का 3 से 7 जून तक भव्य आयोजन किया गया। 3 जून को 101 भांति-भांति के वृक्षों को लेकर पर्यावरण जागरूकता हेतु भव्य शोभा यात्रा महिलाओं, पुरुषों, बच्चों की भारी उपस्थिति में निकाली गई। 101 महिलाएं वृक्ष लिए चल रही थीं तो आर्य संस्कारशाला गुधनी की बेटियां यज्ञ करते हुए व कुछ प्रदर्शन करते व आर्यवीर दल गुधनी के वीर सुन्दर शारीरिक योग प्रदर्शन करते हुए चल रहे थे। अनेक झांकियां देखते ही बनती थीं। शोभायात्रा की मुख्य अतिथि भाजपा नेत्री सीमा चौहान बरेली के सुप्रसिद्ध सर्जन डॉ. गोपाल दत्त रहे। उनके द्वारा एक पीपल का वृक्ष यज्ञ स्थल के पास में लगाया गया तथा थानाध्यक्ष बिल्सी ने भी एक पीपल का वृक्ष थाने में लगाया आर्यों के साथ।

4, 5 व 6 जून को अनेक आर्य सम्मेलन हुए तथा 7 जून को यजुर्वेद पारायण यज्ञ आरम्भ कराया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य संजीव रूप ने कहा कि मंत्र श्लोक, गीत आदि पढ़ने से तब तक कोई लाभ नहीं होता जब तक उनका जीवन में आचरण न किया जाए। शाम को दस हजार लोगों के लिए विशाल भण्डारा हुआ जिसमें जनपद भर के लोगों ने भाग लिया। रात्रि में कवि सम्मेलन हुआ। सभा में बद्री प्रसाद आर्य, कृष्णपाल, किशनपाल, रविन्द्र रवि, परून आर्य, सुखवीर सिंह, प्रश्रय आर्य, सत्यम गोपाल, मदनपाल, प्रेमवीर, पन्ना लाल आदि का विशेष सहयोग रहा। कृण्वंतो विश्वमार्यम के संकल्प नाद के साथ महोत्सव संपन्न हुआ।

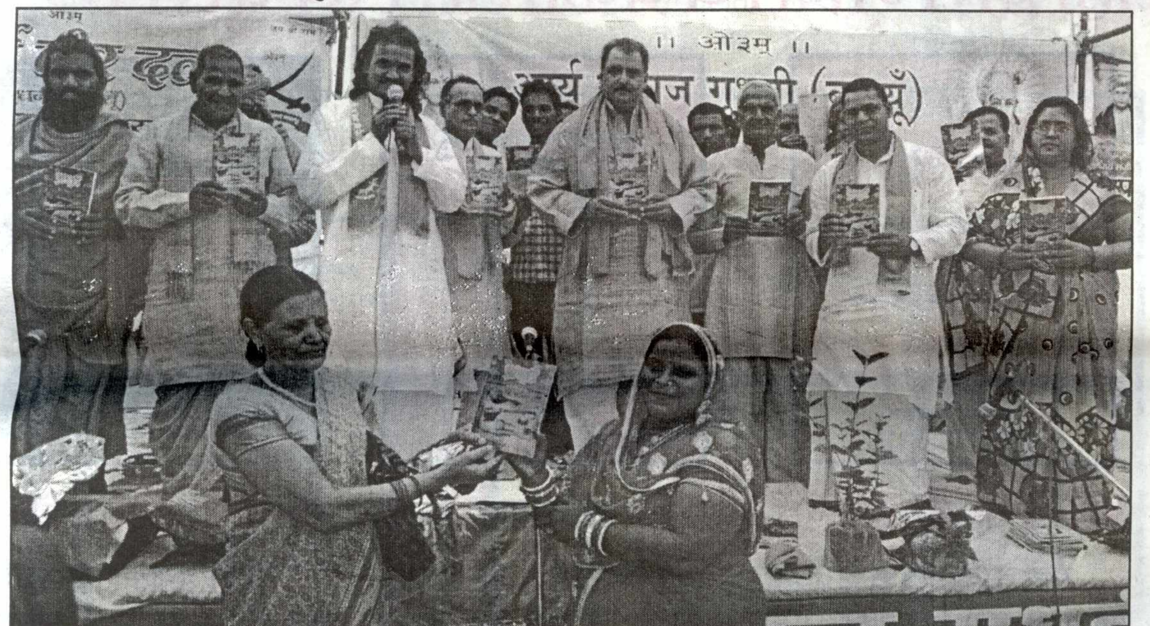

यज्ञ महोत्सव में अतिथियों व कार्यकर्ताओं के सम्मान का दृश्य-केसरी

सामाजिक बुराईयों के खात्मे का संकल्प

अनेक विभूतियां सम्मानित

6 जून को महायज्ञ की पूर्णाहुति हुई। इसमें एम.एल.सी. जितेन्द्र यादव, जिला पंचायत अध्यक्ष पूनम यादव, पूर्व एल.एल.सी. भारत सिंह, ब्लॉक प्रमुख समरेर धीरज सक्सैना यजमान रहे। मुख्य अतिथि जितेन्द्र यादव ने महोत्सव को 21000/- रुपये का सहयोग भी दिया। पूर्णाहुति में सैकड़ों लोगों ने बुराईयां छोड़ने का संकल्प लिया। इस्लामनगर के वीर देव आर्य, गुधनी के रामबाबू शर्मा, मुहम्मदगंज के श्यामनोहर फौजी ने पांच पीपल के वृक्ष लगाने व कई लोगों ने आतिशबाजी, पॉलिथिन, बैण्डबाजा का प्रयोग न करने का संकल्प लिया। इस पर यज्ञ महोत्सव के निर्देशक अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक मिशनरी आचार्य संजीव रूप ने सम्मानित किया।

सभा प्रधान ने की आचार्य संजीव रूप की सराहना

गुधनी। 4 जून को 21 कुण्डीय यज्ञ आरम्भ हुआ जिसमें साठ किलो शुद्ध गौघृत व सवा कुण्टल ऋतु अनुकूल विशिष्ट सामग्री प्रयोग की गई। यज्ञ में सैकड़ों ग्रामों, नगरों से भक्त पहुंचे। प्रथम दिवस एक हजार लगभग लोगों ने भाग लिया। मेरठ के आ. संजय याज्ञिक ने यज्ञ का ब्रह्मत्व किया। पं. भानु प्रकाश शास्त्री बरेली के व राजस्थान की प्रियंका भारती, इटावा की क्षमा पुरवार, आचार्य विजयदेव नैष्ठिक, पं. उदयराज आर्य, चुन्नीलाल आर्य, आचार्य ब्रह्मदेव जी, परून आर्य बिजनौर के भजन व उपदेश हुए।

मुख्य अतिथि आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान देवेन्द्र पाल वर्मा जी ने कहा कि आर्य समाज ही एक मात्र देश की वह संस्था है जहां राष्ट्र कल्याण की, आत्म उत्थान की व स्वस्थ समाज की चर्चा की जाती है। पर्यावरण, नारी उत्थान, धर्म के नाम पर फैले पाखण्ड के निवारणार्थ दिल से कार्य किया जाता है। उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक मिशनरी व यज्ञ महोत्सव के संयोजक निर्देशक आचार्य संजीव रूप के द्वारा किए जा रहे प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। 5 जून को नगर बदायूं पूर्व विधायक महेश चन्द्र गुप्ता, उद्योगपति रविप्रकाश अग्रवाल, डॉ. रूपेन्द्र आर्य, अनिल एडवोकेट, बिसौली से अजीत सक्सैना, बाबा इण्टरनेशनल स्कूल के स्वामी अनुज वार्ष्णेय व अनेक गणमान्य यजमान बने। मुख्य अतिथि डाक अधीक्षक बाबूराम शर्मा रहे।

संस्कारशाला की बेटियों ने किया हतप्रभ

गांव गुंधनी में बुझती नहीं यज्ञाग्नि

रात्रि में आर्यवीर दल सम्मेलन हुआ जिसके मुख्य अतिथि आर्यावर्त केसरी समाचार पत्र के मुख्य सम्पादक डॉ. अशोक कुमार आर्य जी रहे। संस्कारशाला की बेटियों ने अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए व आर्यवीर दल के बच्चों ने दिल्ली के प्रशिक्षक दिनेश आर्य के नेतृत्व में सुन्दर करतब दिखाए। कु. साक्षी, कु. तृप्ति ने अष्टधायी, गीता सुनाई कु. प्रियंका, मोना, ईशा, अंजलि ने यजुर्वेद के कई अध्याय कंठस्थ सुनाए। ईशु आर्य, सत्पम आर्य, प्रश्रय आर्य ने भजन गाए। डॉ. अशोक कुमार आर्य ने सभी बच्चों व कार्यकर्ताओं को पुरुस्तकृत किया। उन्होंने कहा कि आचार्य संजीव रूप भारत के ऐसे मौलिक वैदिक मिशनरी हैं जो 23 वर्षों से ग्रामीण अंचल में वैदिक धर्म की अनवरत अलख जगा रहे हैं। यज्ञ की अग्नि यहां बुझती नहीं। सैकड़ों बच्चे पुरोहित बन चुके हैं यह चमत्कार ही है। सभा में लगभग दो हजार की भारी उपस्थिति थी।

शांति पाठ, वैदिक जयघोष, संकल्पनाद व हर्षोल्लास के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

आर्य समाज गुधनी (बदायूं) उ०प्र० के यज्ञ महोत्सव की चित्रमय झांकियां...

'यज्ञोवै श्रेष्ठतम् कर्म:।' २१ कुण्डों पर ग्राम गुंधनी में श्रेष्ठतम् कर्म करते हुए श्रद्धालु नर-नारी व बच्चे -केसरी।

आर्य वीर का सम्मान करते सम्पादक डॉ० अशोक आर्य

भजनोपदेशिका भारती आर्या को सम्मानित करते आचार्य रूप

मंचासीन आचार्य 'रूप' एवं भजनोपदेशक भानुप्रकाश आर्य

यज्ञ महोत्सव में यौगिक क्रियाओं का प्रदर्शन करते आर्य वीर एवं वीरांगनाएं, तथा गीत गाता बालक

पूर्व विधायक महेश गुप्ता को स्मृति चिन्ह भेंट करते आचार्य रूप

किशोरों व युवाओं की सर्वाधिक रही उपस्थिति

ग्रीष्म ऋतु और गुलाब

कृष्णमोहन गोयल, अमरोहा

गुलाब का फूल फूलों का राजा है सम्पूर्ण विश्व में। इसको आयुर्वेद में भी गुणकारी माना गया है।

(1) ग्रीष्म ऋतु में नेत्रों के समस्त रोगों में गुलाबजल का प्रयोग लाभदायक है। शीतलता प्रदान करता है। खुजली, थकान दूर करता है।

(2) तेज बुखार में माथे पर शीतल जल की कपड़े की पट्टी रखें और उसमें कुछ बूंदें गुलाबजल की डाल दें। लाभ मिलेगा।

(3) ग्रीष्म ऋतु में धूप के प्रको प से चेहरे पर शीतल जी में दो बूंद गुलाबजल की मिलाकर चेहरा धोने से लाभ होता है।

(4) ग्रीष्म ऋतु में गुलाब की पंखुड़ियों से बना शर्बत शीतलता प्रदान करता है।

(5) ग्रीष्म ऋतु में गुलाब इत्र शीतलता प्रदान करता है।

(6) गुलाब की पंखुड़ियों को छाया में सुखाकर खीर बनाते समय उसका प्रयोग करें, खीर का स्वाद अलग होगा।

(7) सदियों से ठण्डाई में बादाम और गुलाब की पंखुड़ियों का शर्बत प्रयोग किया जाता रहा है।

(8) गुलकन्द कब्ज दूर करता है।

बेटी बचाओ का आहवान

सुभाष आर्य
झज्जर (हरियाणा)

वैदिक सत्संग मण्डल समिति के तत्वावधान मे बेटी बचाओ अभियान के तहत यज्ञ–भजन–प्रवचन का कार्यक्रम मौहल्ला भटटी गेट मे आयोजित किया गया जिसमे यज्ञ ब्रहमा पं0 जयभगवान आर्य, यजमान श्री मुकेश कुमार, सोनिया व अनमोल रहे। कार्यक्रम के संयोजक राव रतीराम जी व सुभाष आर्य रहे व कार्यक्रम कि अध्यक्षता पं0 रमेश कौशिक, समिति अध्यक्ष ने की। इस अवसर पर यज्ञ ब्रहमा ने कहा कि एक छोटे से यज्ञ से हजारों धन भेषज वायु का निर्माण होता है जो कि असंख्य प्राणियों को पुष्ट रखती है और रोगो को नष्ट करती है। श्री सुभाष आर्य ने कहा कि ओइम् शब्द के उच्चारण का आत्मा और परमात्मा दोनो से ही संबंध है। इसके जाप से मनुष्य को सुख व शांति प्राप्त होती है। इस अवसर पर मेधावी बेटियों को सम्मानित किया गया। मण्डल अध्यक्ष पं0 रमेश कौशिक जी ने कहा कि केवल चिरागो से ही उजाला नहीं होता बल्कि बेटियां भी घर मे उजाला करती है। बेटी का एक रूप नारी होता है और नारियां अनेक महापुरूष पैदा करके न केवल घर मे बल्कि समाज व संसार मे उजाला प्रदान करती है। प्राध्यापक द्वारकाप्रसाद, अनन्त कुमार व संदीप सैनी ने कहा कि समाज मे व्याप्त बुराईयों को दूर करना बहुत जरूरी है। इनसे समाज मे असन्तोष पैदा होता है। योगाचार्य नवीन व रामनिवास ने कहा कि योग को अपनी दिनचर्या मे शामिल करना जरूरी है ताकि मनुष्य निरोगी व स्वस्थ रहे। इस कार्यक्रम मे सुबेदार भरतसिंह, मास्टर पनसिंह, विजय आर्य, औमप्रकाश यादव, श्रीमति मामकौर, श्रीमति सीता देवी, सुषमा, रितिका, अनिता, दीपक, ईशा, अन्नु, दिशा, रजनी व पूजा आदि काफी संख्या मे महिला व पुरुष शामिल हुए। अन्त मे उपस्थित लोगो को कन्या भ्रूण हत्या ना करने के लिए शपथ दिलाई गई।

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा : पुस्तक सूची

- ❑ **रामायण का वास्तविक स्वरूप**, पृष्ठ-80, मूल्य-20/-
- ❑ **अर्चना यज्ञ पद्धति**, पृष्ठ-56, मूल्य-16/-
- ❑ **अर्चना यज्ञ पद्धति**, पृष्ठ-48, मूल्य-12/-
- ❑ **यज्ञ पद्धति**, पृष्ठ-120, मूल्य-35/-
- ❑ **बन्दा वैरागी** (कवि वीरेन्द्र कुमार राजपूत), पृष्ठ-64, मूल्य-16/-
- ❑ **साधना 'प्रबन्ध काव्य'** (कवि रघुनाथप्रसाद साधक), पृ.-384, (सजिल्द), मूल्य-300/-
- ❑ **आर्यजगत के प्रमुख राष्ट्रीय स्तम्भ**, (शीघ्र प्रकाश्य)
- ❑ **आर्यसमाज के प्रखर व्यक्तित्व**, (शीघ्र प्रकाश्य)
- ❑ **सत्यार्थ प्रकाश**, (महर्षि दयानन्द), पृ.-520 (सजिल्द), मूल्य-160/-
- ❑ **परिधियों के स्पर्श/यात्रा-यात्रा अन्तःयात्रा** (कवि प्रो. विजय कुलश्रेष्ठ), पृष्ठ-112, मूल्य-80/-
- ❑ **नवजागरण के पुरोधा- महर्षि दयानन्द सरस्वती**, (शीघ्र प्रकाश्य)
- ❑ **प्रो० विजय कुलश्रेष्ठ- हीरक जयंती ग्रंथ**, पृष्ठ-112, मूल्य-80/-
- ❑ **पं. प्रकाशवीर शास्त्री** (डॉ. अशोक कुमार आर्य), मूल्य- 5/-
- ❑ **समालोचना शास्त्र** (कवि रघुनाथ प्रसाद साधक), (शीघ्र प्रकाश्य)
- ❑ **तारा टूटा** (वीरेन्द्र कुमार राजपूत), पृष्ठ-52, मूल्य- 14/-
- ❑ **आर्य कन्या की सूझबूझ** (शीघ्र प्रकाश्य), पृष्ठ-16, मूल्य- 5/-

: लघु पुस्तकें/ट्रैक्ट :

- ❖ **हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आर्यसमाज का योगदान** मूल्य- दो सौ रुपये सैंकड़ा
- ❖ **यज्ञ और पर्यावरण**, मूल्य- दो सौ रुपये सैंकड़ा
- ❖ **दयानन्द सप्तक**, मूल्य- तीन सौ रुपये सैंकड़ा
- ❖ **ब्रह्मराशि**, मूल्य- तीन सौ रुपये सैंकड़ा
- ❖ **आर्यसमाज** (राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर') 300/- सैंकड़ा
- ❖ **सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़ें?**मूल्य- एक सौ रुपये सैंकड़ा
- ❖ **क्रान्ति (डॉ. आनन्द सुमन सिंह)** पृष्ठ-56, मूल्य- 20/-
- ❖ **आर्यसमाज की मान्यताएं** (म. नारायण स्वामी) पृ.-16, मूल्य- 8/-
- ❖ **अथ गोकरुणानिधि:** (महर्षि दयानन्द) पृ.-24, मूल्य- 12/-
- ❖ **आर्योद्देश्यरत्नमाला** (महर्षि दयानन्द) पृ.-16, मूल्य- 8/-
- ❖ **अन्त्येष्टि संस्कार विधि** (महर्षि दयानन्द) पृ.-12, मूल्य- 8/-

: आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा द्वारा प्रकाशित पुस्तकें :

- ❖ **वैदिक सिद्धान्त विमर्श** (पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय) मूल्य- 25/-
- ❖ **सत्यार्थप्रकाश दर्शन** (महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत सत्यार्थ प्रकाश विषयक महत्वपूर्ण आलेखों का संग्रह), मूल्य- 60/-

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा (उ0प्र0) द्वारा मुद्रित व प्रकाशित

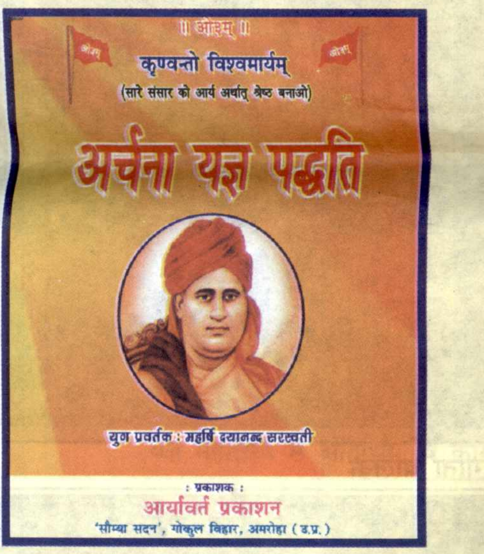

अर्चना यज्ञ-पद्धति

पंच महायज्ञ विधि ब्रह्मयज्ञ (संध्या) एवं दैनिक यज्ञ सहित स्वस्तिवाचन, शान्तिकरणम् आदि मंत्रों के साथ ही अर्थ, काव्यार्थ व भजनों के समावेश सहित, सार्वदेशिक धर्मार्य सभा द्वारा प्रमाणित यज्ञ की, लागत से भी अत्यंत कम मूल्य पर एक उत्कृष्ट पुस्तक।

पृष्ठ– 56, बहुरंगी आर्ट पेपर युक्त टाइटिल, उत्तम क्वालिटी का कागज, नवीन संस्करण–2015, **मूल्य– 16/–रु0**

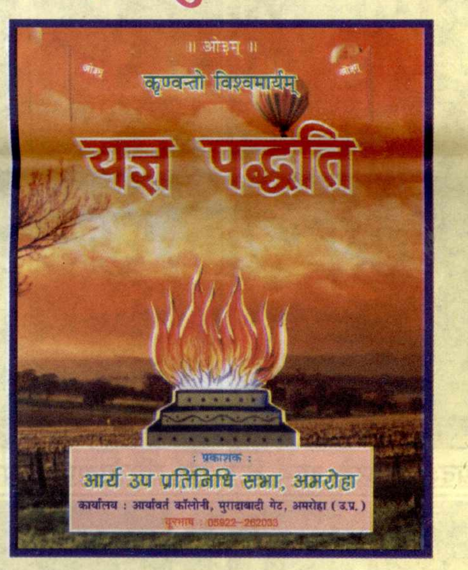

यज्ञ पद्धति

एक ऐसी बहुमूल्य व संग्रहणीय पुस्तक, जिसमें पंच महायज्ञ, ब्रह्मयज्ञ (संध्या), देवयज्ञ, शिलान्यास, व्यापार-प्रारम्भ, जन्मदिवस, विमोचन, उद्घाटन, कर्णछेदन आदि सहित विभिन्न आर्य पर्वो से सम्बन्धित आहुतियों का समावेश है तथा बहुचर्चित भजनों का संग्रह है।

पृष्ठ– 120, बहुरंगी आर्ट पेपर युक्त टाइटिल, उत्तम क्वालिटी का कागज, संस्करण– 2014, **मूल्य– 35/–रु0**

आर्यावर्त केसरी

आप ऐसे भी दे सकते हैं हमें सहयोग

१. आर्यावर्त केसरी की वार्षिक सदस्यता रु० १००/-, आजीवन सदस्यता रु० ११००/- अथवा संरक्षक सदस्यता रु० ३१००/- की सात्विक सहयोग राशि भेजकर।

२. अपने परिजनों, इष्ट मित्रों एवं शुभचिन्तकों को वार्षिक या आजीवन सदस्य बनाकर या उन्हें इस दिशा में प्रेरित करके।

३. किसी महानुभाव, संस्था या संगठन के लिए उसकी सदस्यता राशि स्वयं अपनी ओर से भेजकर।

४. किसी विशेष पर्व, उत्सव, उपलब्धि, जन्मदिवस या वैवाहिक वर्षगाँठ आदि पर अपनी शुभकामनाओं का विज्ञापन देकर।

५. अपने प्रतिष्ठान या संस्थान का विज्ञापन देकर।

६. अपने संस्थान, ट्रस्ट या संगठन के स्थापना दिवस, वार्षिक महोत्सव आदि पर केसरी में विशेष परिशिष्ट का प्रकाशन कराकर। अपने आलेख, विचार, प्रतिक्रिया व संगठन के समाचार भेजकर।

७. आर्यावर्त केसरी के प्रतिनिधि बनकर अथवा किसी भी अन्य रूप में, जैसा आप उचित समझें। आर्यावर्त केसरी को अपना अमूल्य सहयोग दे सकते हैं। कोटिशः धन्यवाद सहित,

-डॉ. अशोक कुमार आर्य, प्रधान सम्पादक

–सत्य धर्म की गवेषणा व अनुसंधान मनुष्य का कर्तव्य–

'वेद, मतमतान्तर, कर्मफल और पुनर्जन्म'

मनमोहन कुमार आर्य

संसार में मनुष्यों की संख्या लगभग 7 अरब है जिसमें सभी स्त्री व पुरुष सम्मिलित हैं।

इन सभी लोगों के अपने अपने मत–मतान्तर, जीवन शैलियां–पद्धतियां, धार्मिक आस्थायें व पूजा पद्धतियां हैं। वर्तमान में अपवादों को छोड़कर प्रायः शिक्षित व अशिक्षित सभी व अधिकांश लोग धन व सुख सुविधाओं के साधन बटोरने के पीछे रात दिन लगे हुए हैं। ऐसा करते हुए धर्म–अधर्म व उचित–अनुचित का ध्यान नहीं रखा जाता। ऐसे लोग कभी यह विचार नहीं करते कि वह वस्तुतः क्या हैं, कौन है, उनके जीवन का उद्देश्य क्या है, किसने व क्यों उनको यह मनुष्य जन्म दिया है, उनकी मृत्यु कब व किस कारण से होगी, मृत्यु के बाद उनकी सत्ता अर्थात् जीवात्मा संसार में विद्यमान रहेगी या नष्ट हो जायेगी, क्या उनका पुनर्जन्म होगा, यदि होगा तो उसका क्या कारण व आधार होगा, पुनर्जन्म में उनके इस जन्म के कर्मों की क्या भूमिका होगी और यदि होगी तो क्या उन्होंने इस जन्म में जो कर्म किये हैं उससे उनके सर्वोत्तम जन्म होने की गारण्टी है? आदि। प्रायः सभी लोग यह भी जानने का प्रयास नहीं करते कि यह संसार किसने व क्यों बनाया, वह है या नहीं और यदि है तो कैसा है और यदि नहीं है क्यों नहीं है? उस सृष्टि बनाने व हमें जन्म देने वाली अदृश्य सत्ता का हमसे क्या सम्बन्ध है। क्या हमारे सभी अच्छे व बुरे कर्म उस सृष्टिकर्त्ता की दृष्टि में हैं व क्या वह हमारे कर्मों को सुफल व दण्ड हमें देगा? क्या हमारे पाप माफ हो सकते हैं? क्या यह मान्यता कोरा अज्ञान व स्वार्थ से प्रेरित है या इसमें कुछ तथ्य भी है? यह सभी महत्वपूर्ण प्रश्न हैं जिन पर प्रत्येक व्यक्ति को अपने खुले मस्तिष्क व बुद्धि से विचार करना चाहिये और अपने जीवन की भावी रूप रेखा निष्पक्ष भाव से तय करनी चाहिये। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो हो सकता है कि इससे हमारी अपूर्णनीय हानि हो जाये और हमें भविष्य में वा जन्म–जन्मान्तरों तक पछताना पड़े।

इन सभी प्रश्नों के उत्तर यदि हम मत–मतान्तरों में ढूंढेंगे तो हमारा अनुमान, ज्ञान व अनुभव है कि यह वहां नहीं मिलेंगे। हमारा समय बर्बाद हो सकता है। वेदों की शरण में जाकर अथवा महर्षि दयानन्द का वैदिक साहित्य सत्यार्थ प्रकाश व ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका व अन्य ग्रन्थों वेद, दर्शन, उपनिषद व मनुस्मृति आदि का अध्ययन कर हम इन सभी प्रश्नों के सत्य व यथार्थ उत्तर पा सकते हैं। उत्तर ही नहीं अपितु हमें जीवन के उद्देश्य व उसको प्राप्त व सफल सिद्ध करने के उपायों का भी यथार्थ ज्ञान होता है। अतः संसार के सभी मनुष्यों को निष्पक्ष होकर स्वामी दयानन्द के वैदिक साहित्य का अध्ययन कर लाभान्वित होना चाहिये। इससे मनुष्य, समाज, देश व विश्व का सही मायनों में कल्याण होगा, ऐसा हम अनुभव करते हैं। वेद इन प्रश्नों का क्या उत्तर देते हैं, उन्हें बताने से पूर्व वेद हैं क्या, इसे संक्षेप में जान लेते हैं। वेद सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न संसार के सभी लोगों के चार पूर्वज ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को ईश्वर द्वारा दिया गया इस सृष्टि से सम्बन्धित व मानवीय कर्तव्यों का सत्य व यथार्थ ज्ञान है। वेदों से प्राचीन ज्ञान व पुस्तकें संसार में अन्य कोई नहीं हैं, यह सर्वसम्मत सिद्धान्त है। वेदों से यह ज्ञात होता है संसार में तीन मूल, नित्य, अनादि, अजन्मा, अमर सत्तायें व पदार्थ हैं। यह क्रमशः ईश्वर, जीव व प्रकृति हैं। ईश्वर व जीवात्मा चेतन पदार्थ हैं तथा प्रकृति जड़ पदार्थ है। ईश्वर सच्चिदानन्द, सर्वव्यापक, निराकार, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, धार्मिक व सृष्टिकर्त्ता है। यह जीवात्मा के भीतर सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी स्वरूप से हर क्षण विद्यमान है और हमेशा जागता रहता है। जीवात्मा एक चेतन तत्व, एकदेशी, बिन्दुवत्, आकार रहित, ज्ञान व कर्म के स्वभाववाला, अल्पज्ञ, ससीम, कर्मों का कर्त्ता व ईश्वरीय व्यवस्था से उन कर्मों के सुख–दुःख रूपी फलों का भोक्ता, फल भोग के लिए जन्म–मरण में फंसा हुआ, ईश्वरोपासना, यज्ञ, सेवा, परोपकार, देशभक्ति आदि वेदविहित सत्कर्मों को करके मुक्ति को प्राप्त होने की क्षमता वाला है। प्रकृति सत्, रज व तम गुणों वाली कारण अवस्था में अति सूक्ष्म कणों वाली होती है। इस प्रकृति को ही इस सृष्टि का निमित्तकारण परमात्मा जीवों के अनुकूल अपने नित्य ज्ञान व सामर्थ्य से सृष्टि रचना कर इसे इच्छित स्थूलाकार कर इस ब्रह्माण्ड की रचना करते हैं। सृष्टि बनाने का कारण ईश्वर की सामर्थ्य (ability to perform) की सफलता सहित जीवों को उनके पूर्वजन्मों व युग–युगान्तर–कल्पों के अवशिष्ट पाप–पुण्य कर्मों के सुख–दुःख रूपी फलों व भोगों को प्रदान करना है।

वैदिक सत्य शास्त्रानुसार मनुष्य जन्म उन जीवात्माओं को प्राप्त होता है जिन्होंने पूर्व जन्म में आधे से अधिक शुभ कर्म किये हों। जितने अधिक शुभ कर्म होंगे उतना अधिक अच्छा मानव जन्म जीवात्मा का होगा। अच्छे जन्म से तात्पर्य है कि सर्वाधिक अच्छे शुभकर्मों व प्रारब्ध वाले जीवात्माओं को अच्छे धार्मिक माता–पिता, आचार्य, सगे सम्बन्धी, धन–सम्पत्ति प्राप्त होते हैं और जिनके शुभ कर्म न्यून परन्तु आधे से अधिक अच्छे होते हैं उन्हें अपने से अधिक शुभ कर्म वाली जीवात्माओं से निम्नतर मनुष्य योनि प्राप्त होती है। मनुस्मृति आदि ग्रन्थों में जन्म का आधार कर्मों को मानकर जो विधान व व्यवस्था दी गई है वह तर्कसंगत होने व वेदों से अविरूद्ध होने से माननीय है। यह कोई अज्ञान व अन्धविश्वास से युक्त मान्यता, सिद्धान्त व परम्परा नहीं है। इससे अधिक समाधानकारक तर्कपूर्ण उत्तर किसी मत–मजहब के पास नहीं है। हमने मनुष्य के बारे में वह क्या है, कौन है और उसका उद्देश्य क्या है? प्रश्नों को उपस्थित किया था। वेदों के आधार पर इनका समाधान है कि मनुष्य यद्यपि ईश्वर द्वारा निर्मित शरीर व जीवात्मा का संघटन है परन्तु इसमें चेतन तत्व जीवात्मा ही मनुष्य है और यह अन्नमय शरीर सृष्टि के पंचभूतों से मिलकर बना है जो मृत्यु होने पर अग्नि में अन्त्येष्टि कर दिये जाने पर नष्ट होकर अपने मूल पंच तत्वों में मिल जाते हैं। जीवात्मा ही वस्तुतः वह मनुष्य है जिसका उल्लेख हमने जीवात्मा का स्वरूप वर्णन करते हुए किंचित विस्तार से पहले कर दिया है। हम कौन हैं? का उत्तर भी मनुष्य एक चेतन तत्व जीवात्मा ही है। मनुष्य के जन्म का उद्देश्य सदकर्मों को करके जन्म व मृत्यु के बन्धनों से छूट कर दुःखों की निवृत्ति व ईश्वर के सान्निध्य में रहकर सुख व आनन्द की प्राप्ति है। यह अवस्था मुक्ति व मोक्ष प्राप्त करने पर प्राप्त होती है। विवेकी पुरूषों को मुक्तावस्था प्राप्त करने के लिए वैदिक कर्मों यथा वेदों का स्वाध्याय वा अध्ययन, ईश्वरोपासना, यज्ञ–अग्निहोत्र, पितृयज्ञ करते हुए माता–पिता–आचार्यों व अतिथियों की सेवा–सत्कार, बलिवैश्वदेव यज्ञ, अंहिसा का पालन, परोपकार, निर्बलों की रक्षा व सेवा आदि कार्यों को करना चाहिये। मुक्ति एक वा अनेक जन्मों में प्राप्त होती है जिसका निर्णायक ईश्वर है। मनुष्य को तो बस वेदानुसार अधिकाधिक सत्कर्मों को करना व स्वयं के जीवन को शुद्ध व पवित्र बनाना ही होता है।

अन्य प्रश्न है कि किसने व क्यों उनको यह मनुष्य जन्म दिया है, जन्मधारी मनुष्य व अन्य प्राणियों की मृत्यु कब व किस कारण से होगी, मृत्यु के बाद उनकी सत्ता अर्थात् जीवात्मा संसार में विद्यमान रहेगी या नष्ट हो जायेगी, क्या उनका पुनर्जन्म होगा, यदि होगा तो उसका क्या कारण व आधार होगा, पुनर्जन्म में उनके इस जन्म के कर्मों की क्या भूमिका होगी और यदि होगी तो क्या उन्होंने इस जन्म में जो कर्म किये हैं उससे उनके सर्वोत्तम जन्म होने की गारण्टी है? इनके उत्तर हैं कि ईश्वर ने हमारे पूर्व जन्म में मृत्यु के पश्चात् न्यायकारी यमराज होने के कारण हमें हमारे कर्मानुसार यह मनुष्य जन्म दिया है। हमारी मृत्यु वृद्धावस्था में होनी है परन्तु किसी रोग या दुर्घटना के कारण पहले भी हो सकती है। अपनी मृत्यु के विषय में मनुष्य किसी भी प्रकार से जान नहीं सकता।

मृत्यु का समय वा काल अनिश्चित है, यह अगले पल वा क्षण में भी हो सकती है अथवा अनेक वर्षों बाद भी। अतः इसकी अवधि अनिश्चित होने के कारण हमें आज से ही मुक्ति के लिए अथवा भावी श्रेष्ठ जन्म वा पुनर्जन्म के लिए प्रयास आरम्भ कर देने चाहियें, इसी में हमारी भलाई है। मृत्यु के बाद हमारी सत्ता नष्ट कदापि नहीं होगी क्योंकि संसार में नाश या अभाव किसी भी पदार्थ व सत्ता का नहीं होता है। वैसे भी जीवात्मा अनादि, अजन्मा, अमर व नित्य है। इसका पुनर्जन्म अवश्यम्भावी है। ऐसा नहीं हो सकता कि पुनर्जन्म न हो, यदि ऐसा होगा तो ईश्वर की व्यवस्था भंग हो जायेगी, जिसकी लेश मात्र भी सम्भावना नहीं है। पुनर्जन्म का कारण हमारे इस जन्म के अभुक्त कर्मों जिनका भोग होना है व पूर्व जन्मों के अवशिष्ट कर्म होंगे। यह सब मिल कर हमारा प्रारब्ध बनेगा और इसी के आधार पर हमारा अगला जन्म होगा। हमारा पुनर्जन्म हमारे कर्म–संचय, प्रारब्ध व कर्मानुसार मनुष्य, पशु, पक्षी, जलचर आदि किसी भी योनि में हो सकता है। हां यह गारण्टी है कि यदि हमारे कर्म सर्वोत्तम होंगे तो हमें सर्वोत्तम योनि व परिस्थितियां मिलेंगी अथवा कर्मानुसार तो मिलनी निश्चित है।

लेख के आरम्भ में प्रस्तुत शेष प्रश्नों का उत्तर भी दे देते हैं। ईश्वर की सत्ता है, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण उसकी कृति वा रचना यह ब्रह्माण्ड और सारा प्राणीजगत् है। उसी ने इसे बनाया है और वही इसे चला रहा है।

यदि वह न होता तो फिर संसार व प्राणी जगत का अस्तित्व ही न होता। उस ईश्वर का हमसे माता–पिता–गुरू–आचार्य–राजा–न्यायाधीश आदि सहित व्याप्य–व्यापक का सम्बन्ध है अर्थात् वह हमारी आत्मा के भीतर भी व्यापक व विद्यमान है। ईश्वर के हमारी आत्मा के भीतर विद्यमान होने से वह हमारे प्रत्येक कर्म भले ही हमने उन्हें रात्रि के अन्धकार में किया हो, को जानता है व उनका साक्षी है। वह किसी बात व कर्म को भूलता नहीं है। उसे सब कुछ सदैव स्मरण रहता है। इसलिए जन्म–जन्मान्तरों के बाद भी वह हमारे कर्मों का फल व दण्ड देने में समर्थ व सक्षम है। 'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्' यह कर्म फल व्यवस्था का आदर्श वाक्य है।

कर्म करते समय प्रत्येक प्राणी को इसे स्मरण रखना चाहिये। हम जो पाप करते हैं उसे संसार में कोई माफ नहीं करा सकता। किसी पर आस्था ले आयें, जप व तप कर लें, परन्तु किये हुए कर्मों को तो ब्याज व सूद के साथ भोगना ही पड़ेगा। पाप माफ हो सकते हैं या कोई करा सकता है, यह स्वयं में एक कल्पना है जिसका वास्तविकता से कोई सम्बन्ध नहीं है। यदि पाप माफ होने लगेंगे तो सभी पाप करेंगे। पाप का फल दुख है और दुःख का कारण पाप है। यदि किसी के पाप माफ हुए होते, तो फिर उसे कोई दुःख न होता। ऐसा एक भी उदाहरण इतिहास में न होने के कारण यह विचार और मान्यता असत्य एवं कोरी कल्पना ही है। विवेकी जन इस पर कदापि विश्वास नहीं कर सकते। ईश्वर कभी किसी के पापों को क्षमा नहीं करता, यही

शेष पृष्ठ १५ पर......

आर्यावर्त केसरी, अमरोहा
१-१५/ १६-३१ जुलाई २०१५

भारतीय दृष्टिकोण से लिखा जाए भारतीय इतिहास

भारतीय इतिहास संकलन समिति के जिला सम्मेलन एवं कार्याशाला में बोलते सुरेन्द्र हंस-**केसरी**

अमरोहा जनपद-इतिहास एवं संस्कृति विषय पर जेएस में हुई कार्यशाला
जनपद के इतिहास पर अक्टूबर में छपेगा संदर्भ ग्रंथ

अमरोहा (आकेसं)। भारतीय इतिहासकारों ने प्रायः पराधीन मानसिकता से ग्रस्त होकर औपनिवेशिक ब्रिटिश साम्राज्यवादी दृष्टिकोण से लिखे गए इतिहास को ही राष्ट्र का इतिहास स्वीकार कर लिया। वास्तव में ऐसा इतिहास कभी भी आने वाली पीढ़ी को दिशा नहीं दे सकता। ये विचार यहां **'अमरोहा जनपदः इतिहास एवं संस्कृति'** विषय पर भारतीय इतिहास संकलन समिति, एवं जे०एस०एच० (पी०जी०) कालेज, के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय के सुदर्शन सभागार में आयोजित एकदिवसीय कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में समिति के पश्चिमी उत्तर प्रदेश, मेरठ प्रान्त के अध्यक्ष प्रोफेसर आर०एस० अग्रवाल ने व्यक्त किये। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो० अग्रवाल ने कहा कि इस कार्यशाला में प्रस्तुत आलेखों तथा जनपद भर के गांव-गांव एवं नगरों से प्राप्त इतिहास आने वाले कल को एक निर्णायक दिशा दे सकेगा। उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता एवं अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय सचिव सुरेन्द्र हंस ने अपने संबोधन में कहा कि भारतीय इतिहास के अनेकों पक्ष इतिहासकारों की लेखनी से अभी तक अछूते पड़े हैं। उन्होंने अखिल भारतीय स्तर पर इतिहास के पुनर्लेखन के साथ-साथ जिलाशः ऐतिहासिक साक्ष्यों के संकलन, उपलब्ध तथ्यों के अन्वेषण और उनके वैज्ञानिक तथा तर्कसंगत विश्लेषण की आवश्यकता पर बल दिया। जिला इतिहास समिति के तत्वावधान में महाविद्यालय में सम्पन्न एकदिवसीय जिला सम्मेलन एवं कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में जनसेवा मिशन, उ०प्र० के संस्थापक एवं अध्यक्ष सुरेश नागर ने कहा कि अंग्रेजों ने चालाकी व धूर्तता से भारत पर कब्जा कर लिया था, तथा इसी प्रकार से उन्होंने हमारे इतिहास से भी खिलवाड़ किया। इसीलिए जरूरी है कि भारतीय इतिहास, भारतीय दृष्टिकोण से लिखा जाए। कार्यशाला में इतिहास समिति के मेरठ प्रान्त के मंत्री डॉ० विघ्नेश कुमार ने अमरोहा जनपद के इतिहास का विशद चित्रण करते हुए 'हसनपुर' दरवाजा, राजा बच्छराज, १८५७ की क्रान्ति में जनपद अमरोहा की भूमिका, बगद व सोत नदी सहित सम्भल, बछरायूं, हसनपुर, धनौरा आदि के इतिहास पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर अमरोहा जनपद के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक परिदृश्यों पर केजीके कालेज, मुरादाबाद के पूर्व प्राचार्य व इतिहास विभाग के अध्यक्ष डॉ० एमएस त्यागी ने अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। इतिहास संकलन समिति के जिला सम्मेलन एवं दो सत्रों में चलने वाली इस एकदिवसीय कार्यशाला में जनपद के इतिहास के विविध आयामों पर प्रकाश डालते हुए डॉ० मो० सियादत नकवी ने कहा कि अमरोहा का इतिहास अमन और चैन का इतिहास है। हिन्दुस्तान के इतिहास में अमरोहा का खास मुकाम है। हिन्दी विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर व अध्यक्ष डॉ० वन्दना रानी गुप्ता ने कहा कि १८५७ की क्रान्ति में अमरोहा का विशेष योगदान रहा है। जिला समिति की उपाध्यक्ष तथा हिन्दी विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर डॉ० बीना रुस्तगी ने वासुदेव तीर्थ के ऐतिहासिक, धार्मिक व सांस्कृतिक महत्व पर शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए कहा कि इस तीर्थ पर कभी योगेश्वर श्रीकृष्ण पधारे थे। समिति के जिलाध्यक्ष रोहिताश कुमार विद्यार्थी व मंत्री प्रकाश प्रजापति ने अतिथियों का स्वागत किया तथा कार्यक्रम की रूपरेखा पर प्रकाश डाला। नौगावां के इकराम आबदी ने कहा कि १८५७ की क्रान्ति में नौगावां के १८ जाबाजों को फांसी दी गयी। कार्यशाला में डॉ० सयुंक्ता चौहान ने गजस्थल व मखदूमपुर पर, डॉ० रमा रस्तोगी ने बाबा गंगनाथ मन्दिर पर, सुमित कुमार ने आर्य समाज, धनौरा के गौरवशाली इतिहास पर, शोधपत्र प्रस्तुत किये। इस अवसर पर डॉ० अखिलेश मिश्र, डॉ० आराधना कुमारी, डॉ० वी०वी बरतरिया, डॉ० एस०के० सिंह, ओमप्रकाश गोले, डॉ० मोमराज सिंह गुर्जर, अजय टण्डन, पवन चौहान, पुष्करलाल गुप्त, बलराज सरन गुप्ता, डॉ० हरिओम अग्रवाल, देशमित्र त्यागी, डॉ० नरेन्द्र सिंह, डॉ० ब्रजेश चौहान, विमल किशोर वन्देमातरम्, सुधांशु विश्नोई, नरेन्द्र कुमार, मुर्तजा आगा, नायाब अहमद, डॉ० महमूद अथर कमाल, नरेन्द्रकान्त गर्ग, डॉ० शीबा अनवर, डॉ० अर्चना तौमर, रामगोपाल, बेबी दिवाकर, अर्जुन, अखिलेश शर्मा, प्रदीप कुमार, डॉ० महेन्द्र मौर्य, मोमिनीन कुरैशी, सारिका गुप्ता, रामसरन अरोरा, राहुल माहेश्वरी, मौ० फहीम, बॉबी शर्मा, जितेन्द्र कुमार, सतेन्द्र पाल सिंह, उवैस खान, अजय कुमार, डॉ० सुमन गुप्ता आदि सहित सैकड़ों इतिहासप्रेमी, शिक्षाविद्, अधिवक्ता, समाजसेवी व पत्रकार आदि उपस्थित थे। समिति के प्रान्तीय उपाध्यक्ष एवं महाविद्यालय में राजनीति विज्ञान के विभाग के एसोसिएट प्रोफसर व अध्यक्ष डॉ० अशोक कुमार रुस्तगी ने जनपद सहित प्रदेश व केन्द्र से पधारे सभी प्रतिनिधियों का आभार व्यक्त किया तथा घोषणा की कि 'अमरोहा जनपद- इतिहास एवं संस्कृति' विषय पर महत्वपूर्ण सामग्री, शोधपत्र, आलेख, गजट, संदर्भग्रन्थ व स्थलीय अभिलखों के आधार पर एक संदर्भ ग्रन्थ का प्रकाशन किया जाएगा, जो इसी वर्ष अक्टूबर माह तक पूर्ण कर लिया जाएगा, तथा इसका लोकार्पण भारतीय इतिहास समिति के मैसूर (कर्नाटक) में आगामी २४,२५ व २६ दिसम्बर को होने वाले अखिल भारतीय महाधिवेशन में किया जाएगा, जिसमें जनपद से भारी संख्या में प्रतिनिधि सहभागिता करेंगे।

सहानुभूति के कार्यक्रम में स्मारिका का लोकार्पण करते अतिथिगण-**केसरी**

स्वास्थ्य जांच शिविर सम्पन्न

सुरेश चन्द्र आर्य
भोजपुर (बिजनौर)।

'सहानुभूति' संस्था के सौजन्य से आर्यसमाज मन्दिर में सम्पन्न शिविर में 22 से अधिक ग्रामीणों के स्वास्थ्य की जांच कर, निशुल्क दवाएं दी गयीं। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र किरतपुर के प्रभारी चिकित्साधिकारी डॉ0 आर0के0 शर्मा, के निर्देशन में डॉ0 शीलकुमार गौतम, डॉ0 सनाउर रहमान, डॉ0 सुभाष सिंह, डॉ0 प्रवेन्द्र सिंह आर्य ने जांच व चिकित्सा की।

शिविर का उद्घाटन दी धर्मार्थ न्यास, किरतपुर के अध्यक्ष विजय गोयल ने किया। संस्था अध्यक्ष आंनन्द प्रकाश आर्य की सहयोगी टीम सुरेश चन्द्र आर्य मंत्री, मुकेश आर्य प्रधान, तथा डॉ0 सतेन्द्र कुमार आर्य, कुलदीप कुमार आर्य, नीरज आर्य, वेदप्रकाश, कुवर रविन्द्र कुमार, दिनेश राणा विशेष रूप से उपस्थित रहे। प्रमिला आर्या, प्रधाना आर्य समाज के साथ ही पर्याप्त संख्या में महिलाओं ने भी सहभागिता की। स्मृति चिह्न व स्मारिका भी भेंट की गईं।

दयानन्द ने किया समग्र क्रान्ति का सूत्रपातः कल्पना

बुडगरा-बुडगरी (बिजनौर)। आर्यसमाज बुडगरा-बुडगरी के वार्षिकोत्सव पर सम्मान कार्यक्रम की मुख्यातिथि कल्पना सक्सेना (पुलिस आफिसर, नगर) ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सामाजिक सुधारों राष्ट्रीय विचारों के लिए समग्र क्रान्ति का सूत्रपात किया। उनकी रचित पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर कितनों ही की जीवन धारा बदल गयी। वुडगरा दयानन्द इंटर कालेज, तिसोतरा ग्राम इं0 कालेज तथा भोजपुर के इं0 कालेज के दो-दो मेधावी छात्रों को प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर वैद्य आनन्द प्रकाश आर्य को शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। उत्सव में जयनारायण 'अरुण'- पूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 ने कहा कि आर्य समाज एक समग्र क्रांति का नाम है, जिसने अभूतपूर्व जनचेतना जाग्रत की। सोमीराम आर्य- सेवानिवृत प्रधानाचार्य,

कार्यक्रम को संबोधित करतीं पुलिस अधिकारी कल्पना सक्सैना-**केसरी**

चन्दक कालेज, भाजपा के राजीव अग्रवाल भी उपस्थित थे। महिला सम्मेलन की अध्यक्षता प्रमिला आर्या- प्रधान महिला आर्यसमाज, भोजपुर ने की। कार्यक्रम का संचालन सोमेश्वर आर्य ने किया।

अध्यापक की आवश्यकता है

गुरुकुल खेड़ा खुर्द में कक्षा 6 से लेकर शास्त्री तक के छात्रों को अंग्रेजी, विज्ञान, हिन्दी व गणित पढ़ानें के लिए एचं बच्चों की देखरेख करने हेतु संरक्षक की आवश्यकता है। वेतन के साथ भोजन, वस्त्र, दूध आदि की सुविधा दी जाती है। **-आचार्य सुधांशु**, प्राचार्य

गुरुकुल खेड़ा खुर्द, दिल्ली- ८२
मोबा. : 9350538952, 8800443826

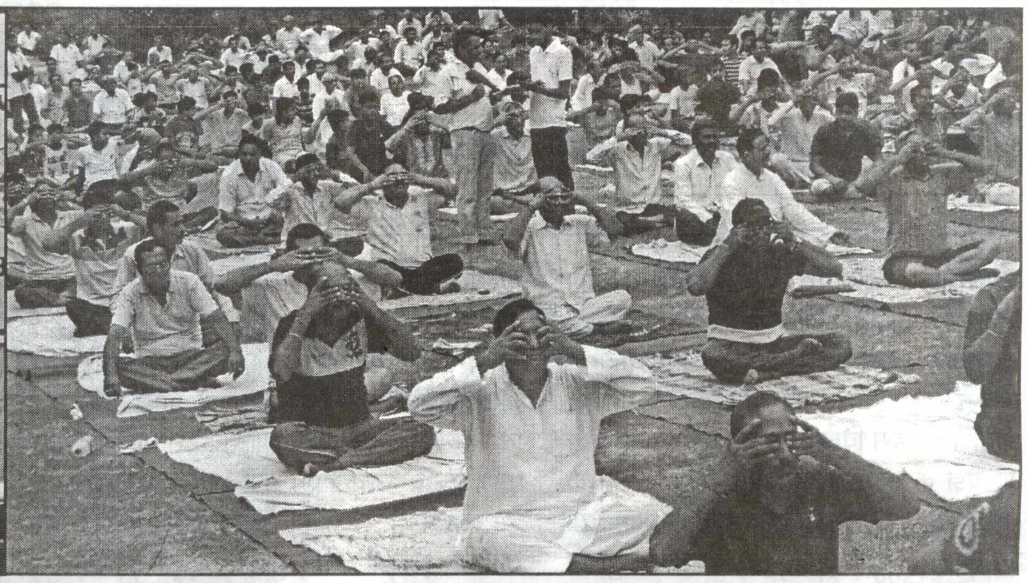

१. अमरोहा के जेएस हिन्दू डिग्री कालेज में योगाभ्यास कराते योगाचार्य, २. योग शिविर में प्रतिभाग करते पुरुष व महिलाएं - केसरी।

योगमय जीवन से ही 'योगयुक्त मानव-रोगमुक्त मानव' का स्वप्न होगा साकार

जेएस हिन्दू पीजी कालेज में आयोजित हुआ तीन दिवसीय विराट योग एवं प्राणायाम शिविर

योगाचार्य नौबहार सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि योग विद्या भारत के ऋषियों की अमूल्य धरोहर है

हजारों योग प्रेमियों ने योग एवं प्राणायाम की क्रियाओं में उत्साह पूर्वक भाग लिया

+ डॉ. नवाब सिद्दीकी
अमरोहा।

जेएस हिन्दू (पीजी) कॉलेज में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस का समारोहपूर्वक भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर योग एवं प्राणायाम के निर्धारित प्रारूप के अनुसार विराट योग एवं प्राणायाम शिविर में महाविद्यालय के विशाल प्रांगण में उपस्थित हजारों योगप्रेमियों ने योग एवं प्राणायाम की क्रियाओं में उत्साह पूर्वक भाग लिया। शिविर स्थल पर प्रातः साढ़े चार बजे से ही शिविरार्थियों का तांता लगना प्रारम्भ हो गया था। महाविद्यालय प्रांगण में

शिविर में मुस्लिम युवतियां भी पीछे नहीं रहीं- केसरी।

योगाचार्य नौबहार सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि योग विद्या भारत के ऋषियों की अमूल्य धरोहर है। यह एक जीवन पद्धति है। जीवन की सामान्यतः दो पद्धतियाँ हैं- एक 'योग पद्धति', जिसमें निरोग्य, स्वास्थ्य, पवित्रता एवं जीवन पर्यन्त सुख व आनन्द है और दूसरी है 'भोग पद्धति', जिसमें रोग, श्रीहीनता व अक्षमता के साथ ही जीवन भर दुख व कलेश रहता है। वैदिक साहित्य में वर्णित अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय व आनन्दमय, पंच कोजों का सम्बन्ध योग से है। योग-विद्या का जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। यह विद्या मनुष्य का शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक विकास कर, उसके व्यक्तित्व को समग्रता प्रदान करती है। योगमय जीवन से ही 'योगयुक्त मानव-रोगमुक्त मानव' का स्वप्न साकार हो सकता है। शिविर के संबन्ध में जानकारी देते हुए संयोजक डा. अशोक कुमार रुस्तगी ने बताया कि अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में अगले दो दिन 22 व 23 जून को भी प्रातः 5.30 से 7.00 बजे तक योग व प्राणायाम का कार्यक्रम चलेगा। योगस्थल पर पतंजलि योगपीठ के वैद्य डारुअभय कुमार तथा एक्यूप्रेसर विशेषज्ञ हुकमसिंह के निर्देशन में आयुर्वेद एवं प्राकृतिक चिकित्सा तथा एक्यूप्रेसर पद्धति से निःशुल्क उपचार की व्यवस्था की गयी। योग शिविर में रामसरन अरोरा ने कहा कि योग के आठ अंग हैं- 'यम-नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। यम, नियम नैतिक अनुशासन से सम्बन्धित हैं। योगाचार्या शशि त्यागी ने कहा कि योग व प्राणायाम का अभ्यास न केवल शरीर व मन के रोगों को ठीक करता है, बल्कि स्नायु तंत्र को भी मजबूत बनाता है। शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए अपर जिला मजिस्ट्रेट एमए अंसारी ने कहा कि आज विश्व में करोड़ों लोगों तक योग का संदेश पहुंच चुका है, जिससे हमारी जीवन शैली, कार्यपद्धति, व सोच में महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई दे रहा है। इस अवसर पर प्रबन्धकारिणी समिति के संरक्षक रमेश कुमार अग्रवाल, अध्यक्ष जयगोपाल माहेश्वरी, मंत्री सुमत कुमार जैन, कोषाध्यक्ष हरीश अरोरा, श्रीराम गुप्ता, आदि सहित गणमान्य नागरिक, समाजसेवी, पत्रकार तथा हजारों योग प्रेमी उपस्थित थे। संचालन डा. अशोक रुस्तगी ने किया तथा प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष जयगोपाल माहेश्वरी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

कई दशकों के सुधार-प्रयासों के बावजूद समाज क्यों नहीं सुधर रहा?

- **क्लब संस्कृति व मठाधीशता उद्देश्यों पर हावी**
- **मंच, मान, माला व माइक पर बढ़ता रुझान**
- **भटका रहा है मूल उद्देश्यों से**

समाज सुधार के प्रयास कई दशकों से समाज की विभिन्न संस्थाओं द्वारा विभिन्न स्तरों पर किये जा रहे हैं। परिस्थितियों में बदलाव आया है, नई चेतना समग्र विश्व में आयी है। आज हम ज्यादा शिक्षित, सभ्य व सम्पन्न हैं। नारी-चेतना से लड़कियों की परिस्थिति में सुधार आया है, और उन्होंने जीवन के सभी स्तरों पर मापदण्ड बनाये हैं तथा हर क्षेत्र में अपनी जगह बनायी है। वे आर्थिक रूप से भी आत्मनिर्भर हुई हैं। पुनर्विवाह (विधवा व परित्यक्ताओं के) काफी होने लगे हैं। लेकिन इतने सकारात्मक परविर्तन के बावजूद समजा में कुरीतियां, दिखावा, फिजूलखर्ची, आडम्बर, विघटन व विकास बढ़े हैं। दहेज, नारी उत्पीड़न, घरेलू हिंसा, व तलाक आदि की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। पारम्परिक रीति-रिवाजों को अनदेखा किया जा रहा है। अपनापन कम (खत्म) होता जा रहा है, रिश्तों में झंझावात देखा जा रहा है। लड़कियों में खुद्दारी बढ़ती जा रही है। रिश्ते शर्तों पर बनने लगे हैं। सेवा भावना कम होती जा रही है।

(१) समाज क्या है- आज समाज दो भागों में बंटा हुआ है। एक है 5 प्रतिशत समाज, तथा दूसरा 95 प्रतिशत समाज। 5 प्रतिशत समाज में प्रभावी, धनी व सम्पन्न लोग हैं, जिनका सर्वत्र वर्चस्व है। इनकी सब जगह पहुंच है। मीडिया व राजनेता भी इनके प्रभाव में हैं। सभी संस्थाओं में इनकी मठाधीशता रहती है, जहां ये 25-30 वर्षों तक एक ही पद पर बने रहते हैं। समाज सुधार के समस्त नियम ये ही निधारित करते हैं, पर पालन नहीं करते हैं। ये चाहते हैं कि 95 प्रतिशत समाज इनका अनुसरण करे। सभी कुरीतियां, दिखावा, आडम्बर व फिजूलखर्ची इनके यहां से शुरु होती है। मिलनी के चार रुपयों को इन्होंने ही चांदी के सिक्कों तथा सोने के सिक्कों में (गिन्नी) परिवर्तित किया है। दूसरा समाज 95 प्रतिशत का सामान्य लोगों का है, जो अपना सामान्य रूप में जीवनयापन करते हैं। इनका न कोई प्रभाव ळे, न कोई पहुंच।

(२) सुधार क्या है- समाज सुधार के सारे नियम 5 प्रतिशत समाज बनाता है और यह अपेक्षा करता है कि 95 प्रतिशत उनका अनुसरण करें। 5 प्रतिशत समाज इन सुधारों का उल्लेख सिर्फ भाषणों में करता है, पर इन नियमों का पालन नहीं करता है। बल्कि जिस हाल में इन नियमों की शपथ ली जाती है, उसी हाल में उन्हें तोड़ा जाता है। 95 प्रतिशत समाज इनकी ढोंगबाजी को समझता है तथा एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देता है। अतः सुधार जीवन शैली में नहीं अपनाए जा सकते।

(३) सामाजिक संस्थाओं का बदलता रूप- सामाजिक संस्थाएं फाइव स्टार क्लब बनने लगी हैं, जहां कुछ ही लोगों का प्रभाव होता है। वे अपने चहेतों की आरती उतारते रहते हैं, उन्हें महिमामण्डित करते रहते हैं। सामाजिक उद्देश्यों पर ध्यान नहीं दिया जाता है। पद, माला, मान-सम्मान, उपाधियां, फोटो, समाचार पत्रों में फोटो छपाना इनका उद्देश्य होता है। मुख्य उद्देश्य गौण हो जाते हैं।

(4) जरूरत है समाज में युवा वर्गों को प्रोत्साहित किया जाए और नई चेतना लाई जाए, जिससे सामान्य भाई-बहनों को प्रतिनिधित्व मिले। मठाधीश खत्म कर, जनतांत्रिक प्रणाली से समाज के सभी घटकों को साथ लेकर समाज सुधार को नई ऊंचाई पर ले जाया तथा जीवनशैली में व्यवहार में उतारा जा सके।

-विश्वशांति टेकड़ीवाल परिवार

श्रद्धापूर्वक किया विश्व कल्याण यज्ञ

अर्जुन देव चढ्डा
कोटा (राजस्थान)

विश्व शान्ति एवं मानव कल्याण की भावना से आर्यसमाज कोटा द्वारा विश्व कल्याण यज्ञ का आयोजन किया गया।जिला आर्य प्रतिनिधि कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा की उपस्थिति में श्रीनाथपुरम् में शहीद सुभाष शर्मा डिप्टी कमाण्डेंट के आवास पर इस विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अग्निमित्र शास्त्री के पौरहित्य में चारों वेदों के विशेष मंत्रों से आहुतियां प्रदान की गई। पं. श्योराज वशिष्ट एवं पं. रघुराज आर्य ने ऋत्विक के कार्यों का निर्वहन किया। लेफ्टिनेंट क्षितिज शर्मा इस यज्ञ के मुख्य यजमान थे। शहीद सुभाष शर्मा की धर्मपत्नी बबीता शर्मा व उनके परिवार के सदस्यों व उपस्थिति अतिथियों ने यज्ञ में आहुति दी। इस अवसर पर जिला सभा प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि आज के इस अराजकतापूर्ण वातावरण में यदि मानव का कल्याण सम्भव है तो मात्र आध्यात्म से ही संभव है और यज्ञ संसार का सबसे श्रेष्ट कर्म है। जिसमें मानवमात्र के कल्याण का भाव निहित है। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अग्निमित्र ने अपने प्रवचन में कहा कि स्वस्तिवाचन एवं शान्तिकरण के मंत्रों में प्राणीमात्र के उत्कर्ष एवं शान्ति की प्रार्थना की गई है। यज्ञ में दी गई आहुति सहस्त्रगुणा बढ़कर पंच भौतिक पदार्थों को शुद्ध करती है जिससे वातावरण से नकारात्मक ऊर्जा का नाश होता है। यज्ञ कार्यक्रम में अनेक स्त्री एवं पुरुष उपस्थित थे। शान्तिपाठ के साथ यज्ञ सम्पन्न हुआ।

श्रद्धापूर्वक यज्ञ में आहुतियां प्रदान करते यजमानों का एक दृश्य -केसरी

महाशय जी ने दिया श्री चड्ढा को आशीर्वाद

कोटा। आर्य समाज के 93 वर्षीय शिरोमणि महाशय धर्मपाल अर्या (चेयरमैन एम0डी0एच0) ने कोटा के वरिष्ठ समाजसेवी व आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा को समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने पर आशीर्वाद दिया है। अर्जुनदेव चड्ढा ने दिल्ली स्थित महाशय धर्मपाल के कार्यालय पर रविवार को उनसे मुलाकात की।

परिवारों को जोड़ने का सशक्त माध्यम है परिचय सम्मेलन

परिचय पुस्तिका का महाशय जी ने किया विमोचन

नई दिल्ली। आर्य युवक-युवतियों के ग्यारहवें परिचय सम्मेलन की विवरणी पुस्तिका का विमोचन आर्य जगत के संतपुरुष व भामाशाह महाशय धर्मपाल ने कीर्तिनगर स्थित अपने कार्यालय में किया। इस अवसर पर महाशय धर्मपाल ने कहा कि सम्मेलन आर्य परिवारों को जोड़ने का सशक्त माध्यम है। इसको दिल्ली के अलावा अन्य प्रान्तों में करने से आर्य समाज के संगठन को और मजबूती मिलेगी।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री सतीश चड्ढा, आर्य समाज कीर्तिनगर के प्रधान ओमप्रकाश आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से संदीप आर्य व कोटा के श्योराज वशिष्ठ उपस्थित थे।

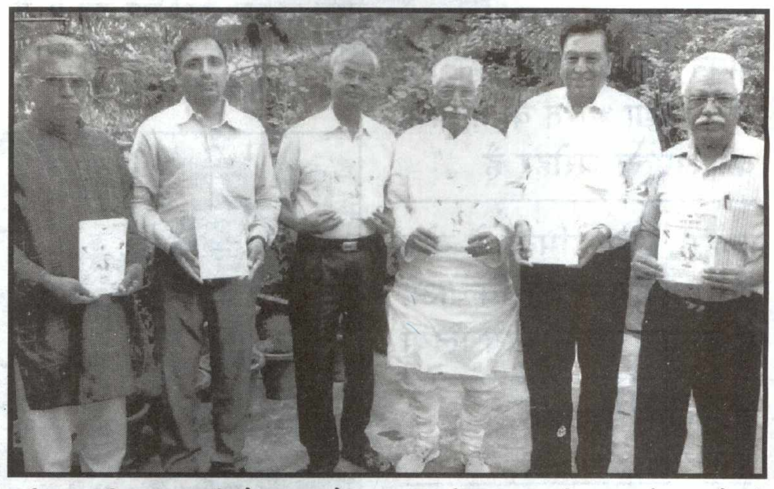

परिचय पुस्तिका का विमोचन करते महाशय जी, चड्ढा जी व आर्यजन -केसरी

ऋग्वेद
।। ओ३म् ।।
यजुर्वेद

'सत्यार्थ प्रकाश'

के प्रकाशन हेतु आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा की अनूठी एवं क्रांतिकारी योजना

● पहली बार सत्यार्थ प्रकाश की लगातार 1,00,000 प्रतियाँ छापने का दृढ़ संकल्प

विशेष : प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' व आर्यावर्त केसरी प्रकाशित किये जाएंगे। घोषित धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं हैं। ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी घोषित धनराशि भेजी जा सकती हैं। धन्यवाद

।। योजना में सम्मिलित होने की शर्तें ।।

- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के इस महायज्ञ में आप भी अपनी आस्थाओं की पावन आहुतियाँ भेंट कर सकते हैं।
- न्यूनतम रु0 3100/- की राशि भेंट करने वाले आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश के अंत में 1000 प्रतियों में प्रकाशित होंगे तथा उन आर्यसमाजों को सत्यार्थ प्रकाश की 31 प्रतियां इस सात्विक राशि के उपलक्ष्य में भेंट की जाएंगी।
- सभी महानुभाओं को उनके द्वारा भेंट की गयी धनराशि के बराबर मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश निशुल्क भेंट किए जाएंगे, अर्थात् यदि आपने रुपये 1,00,000/- (एक लाख रु0) भेंट किये हैं, तो आपको सत्यार्थ प्रकाश की 1000 प्रतियां, अथवा रु. 51,000/- (इक्यावन हजार रुपये) भेंट किये हैं, तो 510 प्रतियाँ नि:शुल्क भेंट की जाएंगी अथवा रु. 5100/-, 3100/-, 2100/-, 1100/- की राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की क्रमश: 51, 31, 21, 11 प्रतियां भेंट की जाएंगी। इस प्रकार आप जितनी धनराशि प्रदान करेंगे, उतने ही मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश आपको भेंट किए जाएंगे।

: प्रकाशन की विशेषताएं :

1. पुस्तक का आकार 20 X 30 का 8 वां भाग
2. कागज की क्वालिटी 80 GSM कम्पनी पैक
3. सजिल्द, उत्तम व आकर्षक कलेवर
4. फोन्ट साइज 16 प्वाइंट
5. 'सत्यार्थप्रकाश के अंत में इस ग्रन्थ व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से जुड़ी ऐतिहासिक विरासतों के रंगीन चित्र भी प्रकाशित होंगे।
6. 'सत्यार्थप्रकाश' की पृष्ठ संख्या लगभग पांच सौ होगी तथा इस ग्रन्थ के प्रकाशन का लागत मूल्य लगभग रु0 100/- प्रति ग्रन्थ होगा।

पता- डॉ. अशोक कुमार आर्य 'सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि', आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221
Ph. : 05922-262033, 09412139333, E-mail : aryawartkesari@gmail.com

सामवेद
अथर्ववेद

सेवा एवं समर्पण से प्राप्त होगा प्रभु प्राप्ति का मार्ग

कन्हैयालाल आर्य

जो व्यक्ति संसार के सभी जीवों की सेवा करता है उसे सच्चा सेवक कहते हैं। जिसके पास जो साधन है उसी के द्वारा प्रत्येक समय सर्वव्यापी परमपिता परमात्मा की बनाई हुई पीड़ित सृष्टि की सेवा करना ही सच्ची प्रभु भक्ति है। यह बात नहीं कि सेवा केवल धन व तन से ही होती है। सेवा करने के लिए सेवा भाव से भरा मन भी होना चाहिए। वस्तुत: यह जीवन है ही केवल सेवा के लिए, जो व्यक्ति ऐसी भावना बना लेता है, वास्तव में सच्चा सेवक वही है। किसी को यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि मुझ में सेवा करने की योग्यता या क्षमता नहीं है। संसार की प्रत्येक वस्तु किसी न किसी प्रकार से सेवा कर ही रही है। जब जड़ वृक्ष और ज्ञानहीन पशु भी अपने शरीर के द्वारा इस सृष्टि की सेवा करते हैं, तब चेतन और विवेक सम्पन्न मनुष्य सेवा करें, इसमें आश्चर्य की क्या बात है? सच्चे सेवक के हृदय में केवल एक ही भावना काम करनी चाहिए कि मैं किस प्रकार अधिक से अधिक और उपयोगी हो सकूंगा। सेवक को सेवा करने में ऐसा विलक्षण सन्तोष और महान सुख मिलता है कि वह सेवा को छोड़कर अन्य किसी वस्तु की इच्छा नहीं करता।

इसे एक दृष्टान्त से समझते हैं- एक बार गुरु गोविन्द सिंह जी ने अपने एक सेवक कन्हैया को कहा कि तुम युद्ध भूमि में घायल सैनिकों को जल पिलाया करो। कन्हैया बिना किसी भेदभाव के सभी घायक सैनिकों को जल पिलाने लगा चाहे व घायल सैनिक अपने पक्ष के थे या मुगलों के। किसी व्यक्ति ने जब कन्हैया को शत्रुपक्ष के घायक सैनिकों को पानी पिलाते देखा तो उसने गुरु गोविन्द सिंह जी को कन्हैया की शिकायत की- गुरुजी, कन्हैया सेवक तो आपका है, परन्तु वह शत्रु पक्ष के घायल सैनिकों को भी पानी पिलाता है। गुरु गोविन्द सिंह जी ने कन्हैया को अपने पास बुलाया और इसका कारण पूछा। तब कन्हैया ने उत्तर दिया- महाराज! आप ने घायल सैनिकों को पानी पिलाने का कार्य मुझे सौंपा है। आपने अपने आदेश में यह तो कुछ नहीं कहा कि केवल अपने पक्ष वालों को ही पानी पिलाना है। आपने तो केवल घायल सैनिकों को पानी पिलाने की बात कही है। घायल तो अपने पक्ष के भी होते हैं, शत्रु पक्ष के भी। मैं इसमें कैसे भेदभाव कर सकता हूं। कन्हैया के इस उत्तर को सुनकर गुरु गोविन्द सिंह जी बड़े प्रसन्न हुए और कहा- कन्हैया! जब तक इतिहास मुझे स्मरण करेगा, तुम्हारे इस सेवा भाव को भी नहीं भुला पायेगा। यह है सच्चे सेवक का कर्तव्य एवं भक्ति। सेवक में मुख्य रूप से निम्नलिखित गुण होने चाहिएं।

1. सेवक स्वाभाविक ही सभी के हित में लगा रहता है।
2. सेवक वर्ण, जाति, धन, पद आदि में कितना ही ऊँचा क्यों न हो जाये, परन्तु वह अभिमान नहीं करता।
3. सेवक किसी जीव से घृणा नहीं करता।
4. सेवक सहिष्णु होता है।
5. सेवक सबकी बिना भेदभाव के सेवा करना चाहता है।
6. सेवक नि:स्वार्थ होकर सेवा करता है।
7. सेवक सेवा कराने वाले व्यक्ति को हेय दृष्टि से नहीं देखता।
8. सेवक मान, अपमान, हानि- लाभ, निन्दा-स्तुति में समदृष्टि रखता है।
9. सेवक प्रशंसा में फूलता नहीं और अपमान होने पर दुखी नहीं होता।

जिस व्यक्ति में सेवा भावना नहीं होती वह सांसारिक विषयों के वश में होकर लोभ वश अपना मानव जीवन व्यर्थ करते हैं। उन्हें बार-बार अनेक योनियों में जन्म लेकर दु:ख भोगना पड़ता है, उसे स्वप्न में भी सच्चा सुख नहीं मिलता। जो आनन्द खिलाने में हैं, वह खाने में नहीं। जो सुख देने में हैं, प्राप्त करने में नहीं। इसलिएं तो हमारी मातायें पहले परिवार को खिलाती हैं, फिर यदि कुछ बच जाये तो खा लेती हैं। उन्हें जो आनन्द खिलाने में आता है वह स्वयं खाने में नहीं आता। इसी प्रकार वह माताओं की माता जगदम्बा माता तो हमें पल-पल हमारी झोली भरती रहती है। परन्तु हम कृतघ्न उस का उपकार नहीं मानते, जीव के उद्धार का एक मात्र यही उपाय है कि वह प्रभु की शरण लेकर मन, वचन और कर्म से सेवा भाव को जीवन का अंग बनाये।

हमारे ऋषि मुनियों ने हमें बार-बार विषय वासनाओं से बचने और इस दुर्लभ मानव जीवन को प्रभु भक्ति में लगाने का उपदेश दिया है। विषय वासनाओं के वश में होकर जीव काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी डाकुओं का शिकार हो जाता है, जो हमारा सब कुछ लूट ले जाते हैं। इसलिए ऋषि मुनियों ने इस मन को विषयों की ओर से हटाकर प्रभु भक्ति में लगाने की चेतावनी दी है। परन्तु प्रभु भक्ति तो तभी हो पायेगी जब हमारी प्रार्थना सार्थक होगी। हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभो! मुझ पर दया कीजिए परन्तु क्या हमने कभी अपने से निम्न स्तर के व्यक्तियों, सेवकों पर कभी दया की है? यदि नहीं तो हमें प्रभु से दया की याचना करने का कोई अधिकार नहीं है। हम प्रभु को न्यायकारी कहते हैं परन्तु हमें उस कार्य को जीवन में अपनाना होगा, तभी हमारी प्रार्थना सार्थक होगी। यही सच्ची सेवा है।

इस मन को प्रभु की भक्ति रूपी गंगा से छुड़ाकर ओस की बूंदों से तृप्त करने की आशा छोड़ो। प्यासा पपीहा धुंए के समूह को देखकर उसे बादल समझ लेता है। वहां जाने पर न तो उसे शीतलता मिलती है और न ही जल प्राप्त होता है। उल्टे धुंए से उसकी आंखे और खराब हो जाती हैं। यही दशा मन की होती है जैसे मूर्ख बाज, कांच के फर्श पर अपने ही शरीर की छाया को देखकर भूख से व्याकुल हुआ उस पर टूट पड़ता है और यह भूल जाता है कि चोंच मारने से उसकी चोंच ही टूटेगी। अत: मन को अविद्या के कीचड़ से बचाकर परमेश्वर प्राप्ति के साधनों से लगाओ। कुछ लोग थोड़ी सी सेवा करके ही यह सोचने लगते हैं कि उन्हें स्वामी के दर्शन क्यों न हुए। यह परेशान हो जाता है। फिर सेवा और समर्पण के भाव को त्यागने का मन बना लेता है। वह अभी कार्य करने के पश्चात् अभी फल पाना चाहता है। उस की स्थिति उस बन्दर की तरह है जिसने अभी-अभी आम की गुठली भूमि में दबाई और साथ ही आम के उत्पन्न होने की आशा लगा लेता है। यही तो हमारा भ्रम है इसी कारण से ही तो हमारा सेवा और समर्पण भाव अधूरा है।

एक दृष्टान्त से इस बात को समझने का प्रयास करते हैं। दो व्यक्ति सेवा, समर्पण, साधना, सत्संग, स्वाध्याय में व्यस्त है। उन दोनों तप करने वाले व्यक्तियों के पास एक देवदूत आता है। पहला तप करने वाला व्यक्ति पूछता है- मुझे मोक्ष कब मिलेगा? देवदूत उत्तर देता है- अभी तो तुम्हें 200 जन्म और लेने होंगे और इस साधना को निरन्तर जारी रखना होगा। यह सुनते ही यह व्यक्ति बहुत दु:खी हो जाता है। वह इस साधनामय कार्य को त्याग देता है कि कौन कम से कम दो सौ मानव जन्मों तक प्रतीक्षा करे। उस का समर्पण अधूरा है। उस का समर्पण लेन देन व सौदे बाजी जैसा है। वह इस साधनामय जीवन को त्यागकर सांसारिक कार्यों में व्यस्त हो जाता है। कुछ समय पश्चात् दूसरा साधना करने वाला व्यक्ति उस देवदूत से पूछता है कि मुझे मोक्ष कब मिलेगा? देवदूत कहता है- जिस वृक्ष के नीचे बैठकर तुम साधना कर रहे हो, इसमें जितने पत्ते हैं, इतने जन्म लेने के पश्चात् तुम्हें मोक्ष की प्राप्ति होगी। यह सुनकर दूसरा व्यक्ति आनन्द विभोर होकर नृत्य करना प्रारम्भ कर देता है। वह कहता है हे प्रभु! आप का धन्यवाद है इतने जन्म लेने के पश्चात् तो मोक्ष मिल ही जायेगा। अत: वह दूसरा व्यक्ति साधना में व्यस्त हो जाता है। दोनों व्यक्तियों की तुलना करें पहला व्यक्ति शीघ्र फल चाहता है, उसका स्वभाव बन्दर जैसा है दूसरा व्यक्ति हजारों योनियों के पश्चात् मोक्ष की प्राप्ति को भी उपलब्धि मानता है। यह है दोनों में अन्तर। पहले का स्वभाव व्यापारी दृष्टिकोण रखता है और दूसरे का स्वभाव समर्पण वाला दृष्टिकोण रखता है। पहला व्यक्ति "इदन्न मम" में विश्वास नहीं रखता वह "इदम् मम" (यह मेरा है) में विश्वास रखता है दूसरा व्यक्ति "इदन्न मम" में विश्वास रखता है। पहले की साधना सेवा समर्पण रहित है। दूसरे की साधना, सेवा एवं समर्पण युक्त है।

जो सेवक कल्पवृक्ष के समान मन चाहा फल देने वाले परमात्मा की सृष्टि की सेवा से जी चुराता है वह सचमुच निकम्मे पत्थर जैसा है। सच्चा सेवक प्रभु का प्रिय हो जाता है। जिस सेवक को अपने स्वामी का बल है उसे कोई भय नहीं लगता। वह सदा के लिए अभय हो जाता है। यही अभय होना ही समर्पण का एक अंग है। जिस दिन हम सच्चे सेवक बन जायेंगे, समर्पण होता जायेगा। समर्पण सार्थक होने पर प्रभु के साक्षात्कार में कोई देरी नहीं होगी।

४/४४, शिवाजी नगर,
गुड़गांव, हरियाणा
चलभाष- ०९९१११९७०७३

पृष्ठ ११ का शेष

वेद मतमतान्तर....

तर्कसंगत भी है और वैदिक सिद्धान्त भी यही है।

अब कुछ मत-मतान्तरों के बारे में भी चर्चा कर लेते हैं। संसार में प्रचलित सभी मत-मतान्तरों का आविर्भाव विगत 3000 वर्षों में हुआ है। हम जानते हैं कि बीता हुआ यह काल अज्ञान, अन्धविश्वासों व कुरीतियों तथा बौद्धिक ज्ञान की दृष्टि से अवनति का काल था। अतः इस अज्ञान व अवनति के काल का प्रभाव मत-मतान्तरों में ईश्वर, जीव व प्रकृति के स्वरूप व विभिन्न उपासना पद्धतियों व जीवन शैलियों के अध्ययन से बुद्धिमान व विवेकी सज्जनों को हो जाता है। अज्ञान मिश्रित कोई भी कार्य लक्ष्य की प्राप्ति नहीं करा सकता। इन मतों में सबसे बड़ी कमी यह है कि यह प्रायः कर्माशय, प्रारब्ध, कर्मफल व पुनर्जन्म के यथार्थ स्वरूप से पूरी तरह से अनभिज्ञ हैं। इसी कारण इनका ईश्वर व जीव विषयक ज्ञान भी आधा-अधूरा व संशोधनीय व परिमार्जनीय कोटि का है। आधुनिक विज्ञान इस बात का उदाहरण प्रस्तुत करता है जहां खोजों पर खोजें (Research) की जाती हैं जिससे पूर्व की खोजों में रह गई कमियां व त्रुटियां दूर की जा सकें। धर्म में भी इसी प्रकार से ईश्वर, जीव, प्रकृति, श्रेष्ठ जीवन शैली, श्रेष्ठतम उपासना पद्धति व लाभ-हितकारी परम्पराओं का सतत अनुसंधान, खोज, अध्ययन, विवेचन किये जाने की आवश्यकता है। ईश्वर ने वेदों के माध्यम से व महर्षि दयानन्द सहित सभी ऋषियों ने पहले ही संसार के सभी मनुष्यों को इनके समाधान दिये हुए हैं। केवल अपने विवेक से यह जानना है कि क्या वैदिक धर्म की मान्यतायें व सिद्धान्त पूरी तरह सत्य, यथार्थ व उपयोगी हैं या नहीं। इसके लिए हम संसार के सभी मतों के विद्वानों का आह्वान करते हैं कि वेदों व वैदिक विधानों की परीक्षा, अनुसंधान व विवेचना कर सत्य को स्वीकार तथा असत्य को अस्वीकार करें। इसी में समस्त मानवजाति की भलाई व कल्याण हैं। यह कार्य अब नहीं तो भविष्य में देर वा सबेर होना ही है। आने वाली पीढ़िया किन्हीं लोगों के अज्ञान व स्वार्थों के लिए अपने हित का बलिदान कदापि नहीं करना चाहेंगीं। विज्ञानियों की तरह आने वाले समय में सच्चे धर्म जिज्ञासु, पिपासु व निष्पक्ष विद्वान अवश्य उत्पन्न होंगे जो धर्म के क्षेत्र में अनुसंधान व वैज्ञानिक रीति से परीक्षा कर सत्य धर्म का स्वरूप प्राप्त करेंगे और सारा संसार उस सत्य धर्म का अनुयायी बनेगा। हमें अपने ज्ञान, अध्ययन व अनुभव से लगता है कि वह धर्म व मत वैदिक रीति से ईश्वरोपासना व पंचमहायज्ञ युक्त "वैदिक धर्म" ही होगा जिसका पुरुत्थान महर्षि दयानन्द ने उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में किया था। आईये, हम आज ही धर्म के क्षेत्र में सत्य का अनुसंधान आरम्भ कर दें और बहुमूल्य समय नष्ट न करें। 'काल करे सो आज कर, आज करे सो अब, पल में प्रलय होएगी, बहुरि करोगे कब?' इसी के साथ लेख को विराम देते हैं।

196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित तथा महात्मा नारायण स्वामी द्वारा लिखित 'आर्य समाज की मान्यताएं' एवं 'महर्षि दयानन्द की विशेषताएं' पढ़िए तथा वार्षिकोत्सवों, पारिवारिक एवं सार्वजनिक समारोहों में सैकड़ों के हिसाब से बांटिए। - व्यवस्थापक (९४१२१३९३३३)

आओ चलें गांधीधाम

३६५ दिनों- २४ घंटे कार्य करने वाली एक अनूठी आर्यसमाज

जहां 'जीवन प्रभात' के रूप में स्थापित किया गया है एक भव्य 'सनाथालय'- जहां हो रहा है भविष्य का निर्माण

आओ! एक बार देखें- फिर करें विश्वास

आर्य समाज- गांधीधाम (गुजरात)

अर्थात् विश्व की एकं अनूठी एवं जीवन्त आर्य समाज

उत्कृष्ट सेवा के ६० वर्ष

- १९४८ में आर्य समाज गांधीधाम की गुजरात में स्थापना।
- २००१ में भुज में आए भयानक भूकम्प में निराश्रित हुए बच्चों के लिए जीवन प्रभात प्रकल्प की स्थापना।
- वर्तमान में यहां २०० बालक, बालिकाओं का हो रहा है पालन-पोषण।
- देखने योग्य है जीवन प्रभात प्रकल्प का भव्य परिसर।
- यहां निर्मित है भव्य यज्ञशाला, ध्यानकेन्द, संगीत कक्ष, जिम, समृद्ध पुस्तकालय, हस्तकला एवं हस्तशिल्प कक्ष, कम्प्यूटर कक्ष, भव्य एवं विशाल गऊशाला, जहां हैं बच्चों के लिए शुद्ध गोघृत एवं दुग्ध की आपूर्ति के लिए उच्चस्तरीय नस्ल की ३५ देशी गाएं।
- विशाल एवं भव्य डीएवी पब्लिक स्कूल।
- यहां प्रतिवर्ष सैकड़ों की संख्या में पधारती हैं देशी व विदेशी हस्तियां, जिनमें प्रमुख हैं भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, अनेक केन्द्रीय तथा प्रान्तीय मंत्री, राजनेता, उच्चाधिकारी, आध्यात्मिक विभूतियां संन्यासी, विद्वान आदि।
- यह है पूर्णरूपेण कम्प्यूटरीकृत चौबीस घण्टे कार्य करने वाली विश्व की अनूठी एवं जीवन्त आर्य समाज।
- काण्डला पोर्ट ट्रस्ट द्वारा दानस्वरूप प्रदत्त चार एकड़ भूमि में से दो एकड़ में बना है भव्य भवन तथा दो एकड़ भूमि में फैला है महर्षि दयानन्द उपवन एवं भव्य पार्क।
- प्राकृतिक एवं भौतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण है सम्पूर्ण परिसर। देखते ही बनती है परिसर की छटा।
- आर्य समाज के सभी ट्रस्टी जीवन प्रभात प्रकल्प को 'अनाथालय नहीं वरन् सनाथालय' बनाने के लिए हैं कृत संकल्प।
- बिना देखे सम्भव नहीं आर्य समाज जीवन प्रभात की आध्यात्मिक, भौतिक सौंदर्य की परिकल्पना। देखकर ही करें विश्वास।
- २००४ में दक्षिण भारत में आयी सुनामी के पीड़ितों के पालन-पोषण के लिए निर्मित किया है जीवन प्रभात प्रकल्प पाण्डिचेरी, जहां ४८ बच्चों की हो रही है देखभाल।
- नियमित चलती हैं योग कक्षाएं।
- सुविधापूर्ण ऑडिटोरियम युक्त है विशाल वैदिक संस्कार केन्द्र।
- १९९७ से यहां स्थापित है मैडिकल ऑक्सीजन बैंक।
- ११ एकड़ भूमि पर प्रस्तावित है, शैक्षणिक शंकुल।
- उच्च स्तरीय लालन-पालन के साथ ही गुजरात के श्रेष्ठ संस्थानों से यहां के बच्चे कर रहे हैं अध्ययन।

आर्य समाज गांधीधाम को दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत ५० प्रतिशत करमुक्त है तथा २५ हजार से अधिक दान देने पर आयकर की धारा ३५ एसी के अन्तर्गत १०० प्रतिशत करमुक्त है। आइए, आर्य समाज जीवन प्रभात के प्रकल्प से जुड़िए और मानवता के इस महान कार्य में अपना बहुमूल्य योगदान दीजिए।

-: निवेदक :-

पुरुषोत्तम पटेल
प्रधान

विजय गांधी
उपप्रधान

वाचोनिधि आचार्य
महामंत्री

मोहन जांगिड़
मंत्री

गुरुदत्त शर्मा
कोषाध्यक्ष

गिरीश खोसला 'वानप्रस्थ-आर्यपथिक'
कुलपिता- जीवनप्रभात (अमेरिका)

ट्रस्टी
अशोक पोपट, श्रीमती कस्तूरबेन पटेल, अखिलेश आचार्य, सूर्यकान्त हरसोरा, खेमचन्द जांगिड़, श्रीमती विमलादेवी शर्मा, राजेन्द्र गौड़, श्रीमती सविता गर्ग, श्रीमती लीलाबेन के शेट्टी

मसालों के शहंशाह महाशय धर्मपाल

प्रेरक है सफलता की गाथा

आर्यावर्त केसरी

संरक्षक
श्रीराम गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र, यतीन्द्र विद्यालंकार, रवित विश्नोई, डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- फरमूद सिद्दीकी, इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033,
9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawart_kesari@rediffmail.com
aryawartkesari@gmail.com

गुरुकुल करतारपुर की प्रवेश सूचना

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, करतारपुर, जिला- जालन्धर में सत्र 2015-16 के लिए प्रवेश प्रारम्भ हैं। कक्षा 5,6,7 तथा 8 में उत्तीर्ण छात्र, जो शारीरिक और मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ हों, को प्रवेश दिया जाएगा। महाविद्यालय में आधुनिक विषयों (विज्ञान, कम्प्यूटर) के सथ-साथ संस्कृत तथा अंग्रेजी सम्भाषण का भी प्रशिक्षण एवं अभ्यास कराया जाता है। विद्वान तथा चरित्रवान छात्रों के निर्माण में प्राचीन तथ नवीन शिक्षा का समन्वय है। वर्तमान की शिक्षा के अनुरूप अंग्रेजी, गणित, भूगोल, विज्ञान आदि पढ़ाने के लिए योग्य अध्यापकों की व्यवस्था है। आधुनिक तकनीक से परिचित रखने के लिए कम्प्यूटर की भी प्रशिक्षण दिया जाता है।

सम्पर्क सूत्र- 0181-2782252, 0181-2782249, 09888764311, 09803043271

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय
करतारपुर- १४४८०१, जिला- जालंधर (पंजाब)

भरपूर ताकत के लिए सदा प्रयोग करें मुग़ल-ए-आज़म कैप्सूल व क्रीम। हर मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध है या डाक द्वारा मंगाएं।

निल स्पर्म रोगी व बेऔलाद अवश्य मिलें

हाशमी दवाखाना, अमरोहा (उ.प्र.)
मोबा. नं०- 09997161320, 09997161317

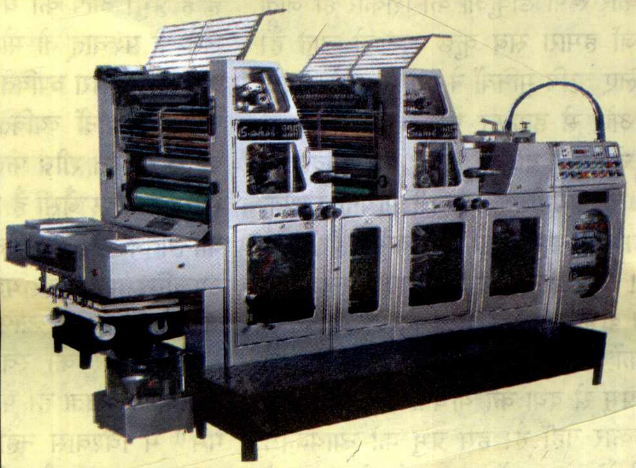

आर्यावर्त प्रिन्टर्स

रूपये **225** में **1000** कलर्ड विज़िटिंग कार्ड

नोट : आप हमें अपने कार्ड का डिज़ाइन ई-मेल भी कर सकते हैं।

हर प्रकार के मल्टी कलर्ड पोस्टर, पैम्फलेट, हैण्डबिल, किताब, ट्रैक्ट, कैलेण्डर, समाचार पत्र व पत्रिका, स्टीकर, बिल बुक, कलर प्रोस्पैक्टस, कॉलेज मैग्ज़ीन, स्कूल डायरी, रिपोर्ट बुक, फीस कार्ड, फीस रसीद, रिज़ल्ट कार्ड, कलर्ड लैटर हैड, लिफाफे, कलर्ड कार्ड आदि के लिए सम्पर्क करें-

आर्यावर्त प्रिंटर्स

सौम्या सदन, गोकुल विहार, निकट श्रीराम पब्लिक इ. कालेज, अमरोहा-244221
Ph. : 05922-262033, 08273236003, 9758833783, 09412139333
e-mail : aryawartkesari@gmail.com